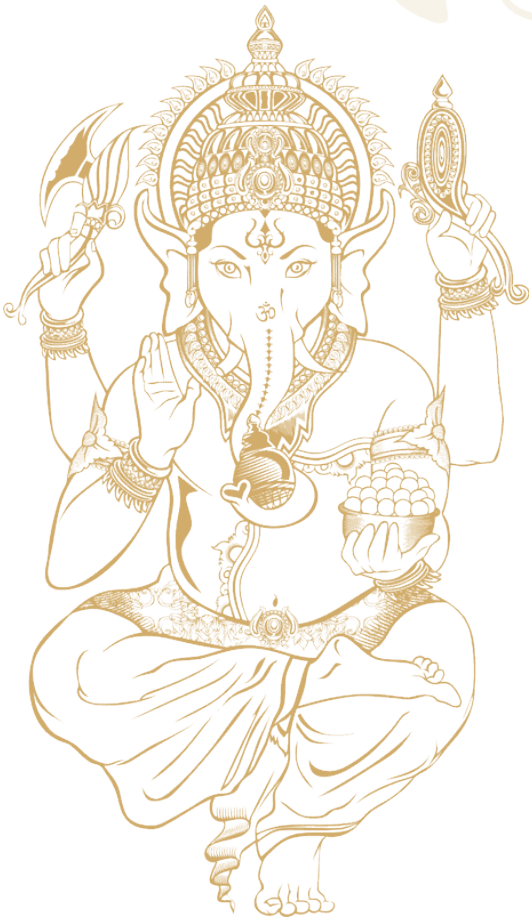

Mr.

Ms.

Model: Web-MatchAnalysisDetailed

Order No: 119179401

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
01/10/1991	जन्म तिथि	28/04/1993
मंगलवार	दिन	बुधवार
घंटे 11:15:00	जन्म समय	11:02:00 घंटे
घटी 11:54:13	जन्म समय(घटी)	12:02:29 घटी
India	देश	India
Mumbai	स्थान	Mumbai
18:58:00 उत्तर	अक्षांश	18:58:00 उत्तर
72:50:00 पूर्व	रेखांश	72:50:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:38:40	स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:29:18	सूर्योदय	06:13:00
18:27:30	सूर्यास्त	18:59:42
23:44:47	चित्रपक्षीय अयनांश	23:46:05

वृश्चिक	लग्न	मिथुन
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	बुध
मिथुन	राशि	मिथुन
बुध	राशि-स्वामी	बुध
आर्द्रा	नक्षत्र	पुनर्वसु
राहु	नक्षत्र स्वामी	गुरु
4	चरण	3
परिघ	योग	धृति
कौलव	करण	गर
छ-छत्रपति	जन्म नामाक्षर	हा-हर्षा
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष
शूद्र	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
श्वान	योनि	मार्जार
मनुष्य	गण	देव
आद्य	नाड़ी	आद्य
सिंह	वर्ग	मेष

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
राहु 4वर्ष 5मा 22दि		18:13:59	वृश्चि	लग्न	मिथु	24:46:32	गुरु 6वर्ष 9मा 17दि	
शनि		13:48:39	कन्या	सूर्य	मेष	14:10:43	बुध	
24/03/2012		16:40:57	मिथु	चंद्र	मिथु	27:40:04	14/02/2019	
24/03/2031		25:49:55	कन्या	मंगल	कर्क	06:20:53	14/02/2036	
शनि	28/03/2015	11:51:41	कन्या	बुध	मीन	25:51:21	बुध	13/07/2021
बुध	05/12/2017	10:10:09	सिंह	गुरु व	कन्या	12:39:43	केतु	10/07/2022
केतु	13/01/2019	02:43:38	सिंह	शुक्र	मीन	10:34:27	शुक्र	10/05/2025
शुक्र	15/03/2022	06:27:35	मक व	शनि	कुंभ	05:05:08	सूर्य	16/03/2026
सूर्य	25/02/2023	21:24:05	धनु	राहु	वृश्चि	18:50:35	चन्द्र	16/08/2027
चन्द्र	25/09/2024	21:24:05	मिथु	केतु	वृष	18:50:35	मंगल	12/08/2028
मंगल	04/11/2025	16:08:57	धनु	हर्ष व	धनु	28:25:20	राहु	01/03/2031
राहु	10/09/2028	20:14:56	धनु	नेप व	धनु	27:22:37	गुरु	06/06/2033
गुरु	24/03/2031	24:55:52	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	00:49:47	शनि	14/02/2036

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:44:47 चित्रपक्षीय अयनांश 23:46:05

लग्न-चलित

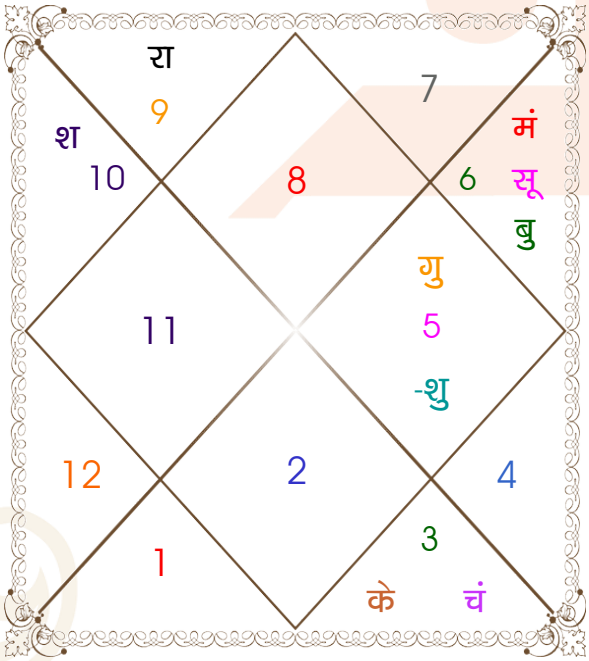

लग्न-चलित

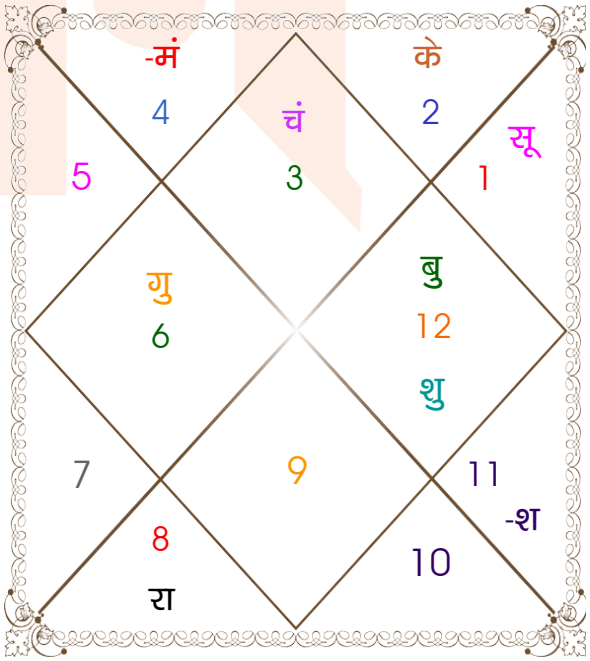

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चन्द्र कुंडली

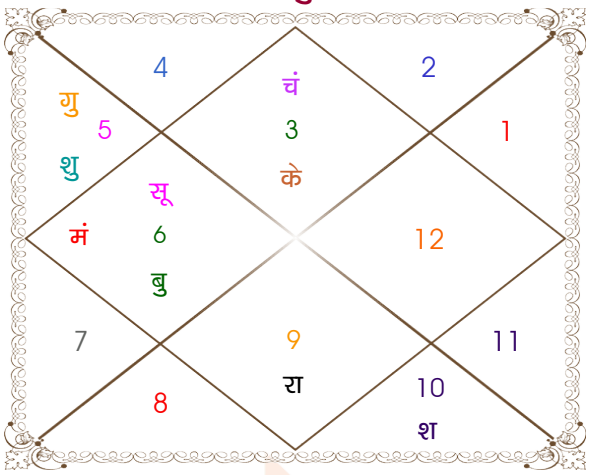

चन्द्र कुंडली

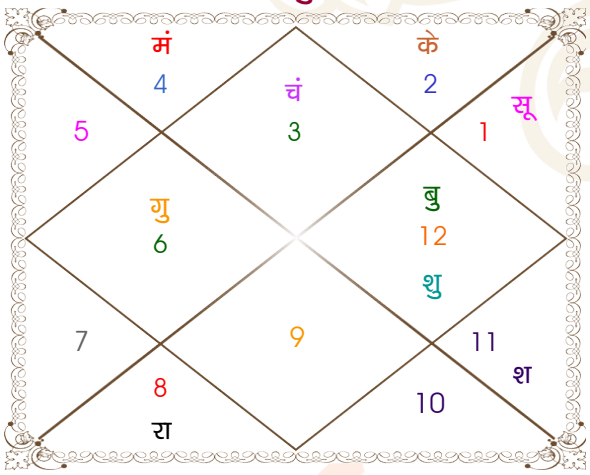

सूर्य कुंडली

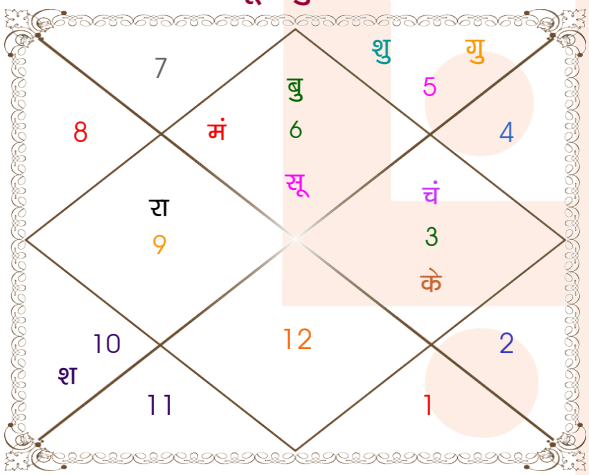

सूर्य कुंडली

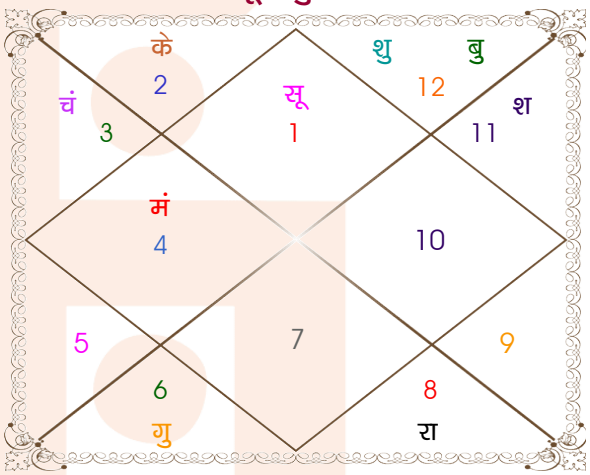

नवमांश कुंडली

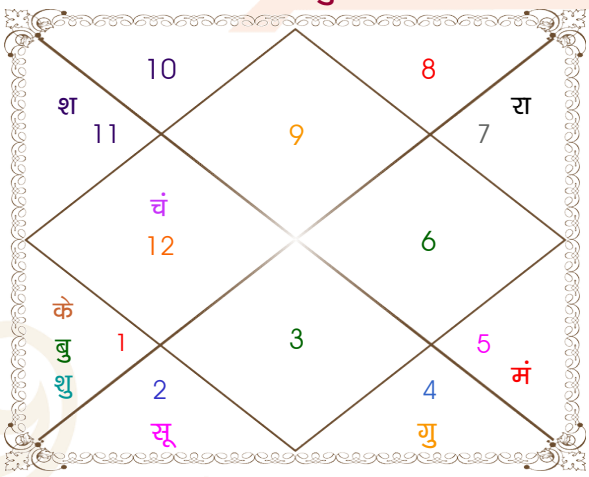

नवमांश कुंडली

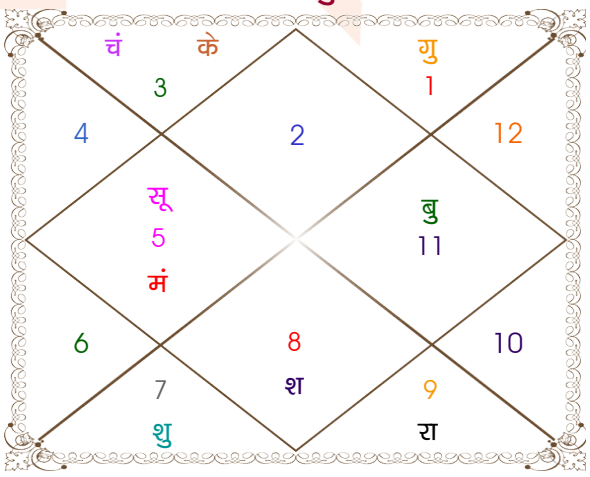

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : राहु 4 वर्ष 3 मास 30 दिन

के.पी. अयनांश : 23:38:18

फॉरच्युना : सिंह 21:12:47

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	13:55:08	बुध	चंद्र	गुरु	गुरु
चंद्र		मिथु	16:47:26	बुध	राहु	शुक्र	शनि
मंगल		कन्या	25:56:24	बुध	मंगल	राहु	चंद्र
बुध		कन्या	11:58:10	बुध	चंद्र	राहु	राहु
गुरु		सिंह	10:16:38	सूर्य	केतु	शनि	शुक्र
शुक्र		सिंह	02:50:07	सूर्य	केतु	शुक्र	बुध
शनि	व	मक	06:34:04	शनि	सूर्य	बुध	गुरु
राहु		धनु	21:30:34	गुरु	शुक्र	गुरु	चंद्र
केतु		मिथु	21:30:34	बुध	गुरु	गुरु	मंगल
हर्ष		धनु	16:15:26	गुरु	शुक्र	चंद्र	चंद्र
नेप		धनु	20:21:25	गुरु	शुक्र	गुरु	शनि
प्लूटो		तुला	25:02:21	शुक्र	गुरु	बुध	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृश्चि	18:20:28	मंगल	बुध	बुध	शनि
2	धनु	18:18:22	गुरु	शुक्र	राहु	राहु
3	मक	20:29:09	शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र
4	कुंभ	23:54:48	शनि	गुरु	बुध	बुध
5	मीन	25:31:37	गुरु	बुध	राहु	शुक्र
6	मेष	23:22:40	मंगल	शुक्र	शनि	मंगल
7	वृष	18:20:28	शुक्र	चंद्र	बुध	शुक्र
8	मिथु	18:18:22	बुध	राहु	चंद्र	राहु
9	कर्क	20:29:09	चंद्र	बुध	शुक्र	गुरु
10	सिंह	23:54:48	सूर्य	शुक्र	शनि	गुरु
11	कन्या	25:31:37	बुध	मंगल	राहु	शुक्र
12	तुला	23:22:40	शुक्र	गुरु	शनि	राहु

भाव कुंडली

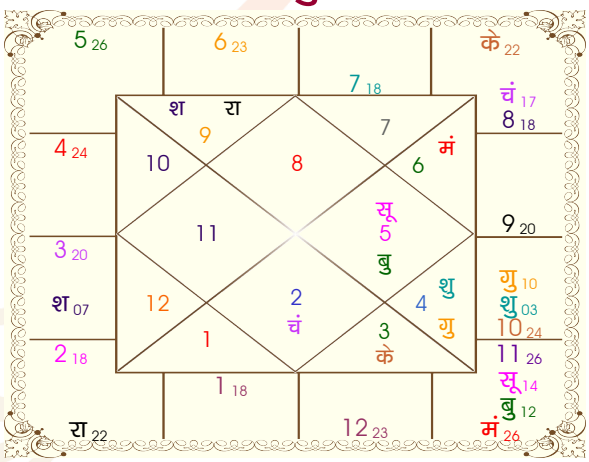

भोग्य दशा काल : गुरु 6 वर्ष 8 मास 0 दिन

के.पी. अयनांश : 23:39:36

फॉरच्युना : कन्या 08:22:22

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मेष	14:17:12	मंगल	शुक्र	शुक्र	राहु
चंद्र		मिथु	27:46:33	बुध	गुरु	शुक्र	गुरु
मंगल		कर्क	06:27:22	चंद्र	शनि	बुध	मंगल
बुध		मीन	25:57:50	गुरु	बुध	राहु	चंद्र
गुरु	व	कन्या	12:46:12	बुध	चंद्र	राहु	शनि
शुक्र		मीन	10:40:56	गुरु	शनि	सूर्य	शनि
शनि		कुंभ	05:11:37	शनि	मंगल	सूर्य	गुरु
राहु		वृश्चि	18:57:04	मंगल	बुध	केतु	राहु
केतु		वृष	18:57:04	शुक्र	चंद्र	बुध	राहु
हर्ष	व	धनु	28:31:48	गुरु	सूर्य	मंगल	राहु
नेप	व	धनु	27:29:06	गुरु	सूर्य	चंद्र	मंगल
प्लूटो	व	वृश्चि	00:56:16	मंगल	गुरु	मंगल	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	24:53:01	बुध	गुरु	बुध	मंगल
2	कर्क	19:52:18	चंद्र	बुध	शुक्र	चंद्र
3	सिंह	17:46:37	सूर्य	शुक्र	मंगल	बुध
4	कन्या	19:25:29	बुध	चंद्र	बुध	शनि
5	तुला	22:49:37	शुक्र	गुरु	शनि	शुक्र
6	वृश्चि	24:57:04	मंगल	बुध	राहु	शनि
7	धनु	24:53:01	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्र
8	मक	19:52:18	शनि	चंद्र	केतु	सूर्य
9	कुंभ	17:46:37	शनि	राहु	सूर्य	शनि
10	मीन	19:25:29	गुरु	बुध	शुक्र	शुक्र
11	मेष	22:49:37	मंगल	शुक्र	शनि	शुक्र
12	वृष	24:57:04	शुक्र	मंगल	राहु	शनि

भाव कुंडली

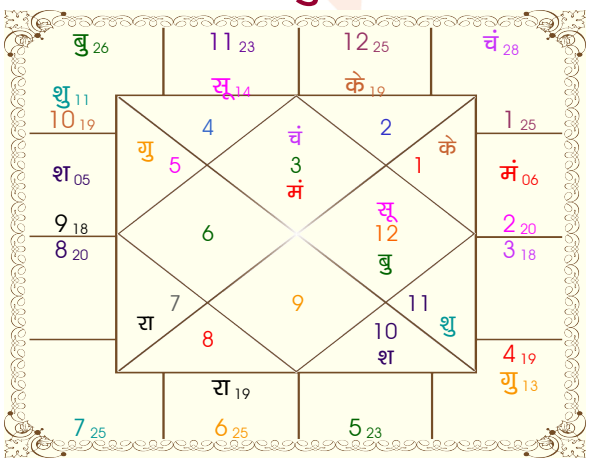

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल,
2	चंद्र, गुरु- शनि, राहु, केतु-
3	शनि-
4	शनि-
5	गुरु- केतु-
6	मंगल,
7	सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र- राहु-
8	बुध- गुरु, शुक्र, केतु,
9	सूर्य- चंद्र- बुध- गुरु, शुक्र, राहु, केतु,
10	सूर्य, बुध, शनि+
11	मंगल+ बुध-
12	शुक्र- राहु-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु- केतु,
2	चंद्र- गुरु- केतु-
3	सूर्य- चंद्र, गुरु,
4	बुध, राहु-
5	सूर्य- शुक्र- राहु,
6	मंगल- शनि-
7	चंद्र- गुरु-
8	मंगल+ शुक्र+ शनि,
9	सूर्य, मंगल- शुक्र+ शनि-
10	सूर्य, चंद्र- बुध+ गुरु- राहु,
11	मंगल- शनि- केतु,
12	सूर्य- शुक्र-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	7, 9- 10,
चंद्र	2, 7, 9-
मंगल	1, 6, 11+
बुध	7, 8- 9- 10, 11-
गुरु	2- 5- 8, 9,
शुक्र	7- 8, 9, 12-
शनि	2, 3- 4- 10+
राहु	2, 7- 9, 12-
केतु	2- 5- 8, 9,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 5- 9, 10, 12-
चंद्र	1, 2- 3, 7- 10-
मंगल	1, 6- 8+ 9- 11-
बुध	1, 4, 10+
गुरु	1, 2- 3, 7- 10-
शुक्र	5- 8+ 9+ 12-
शनि	1, 6- 8, 9- 11-
राहु	1- 4- 5, 10,
केतु	1, 2- 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	गुरु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

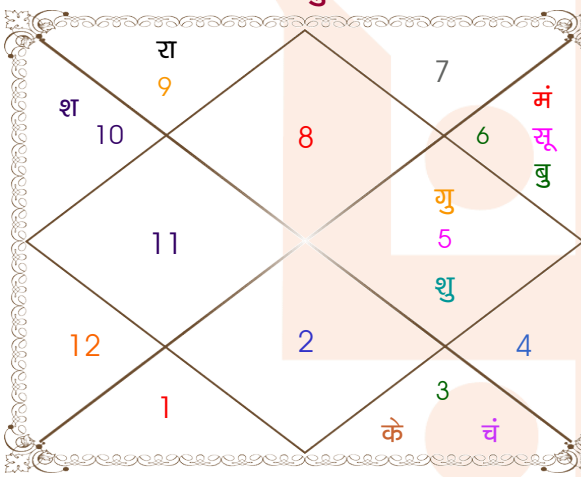

देह विचारः

लग्न कुंडली

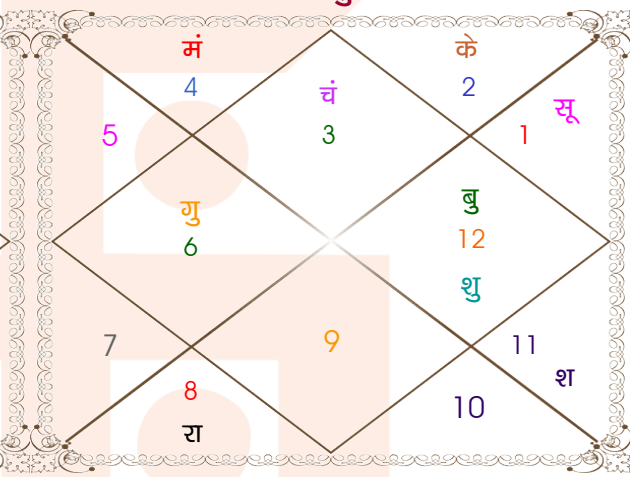

देह विचारः

होरा कुंडली

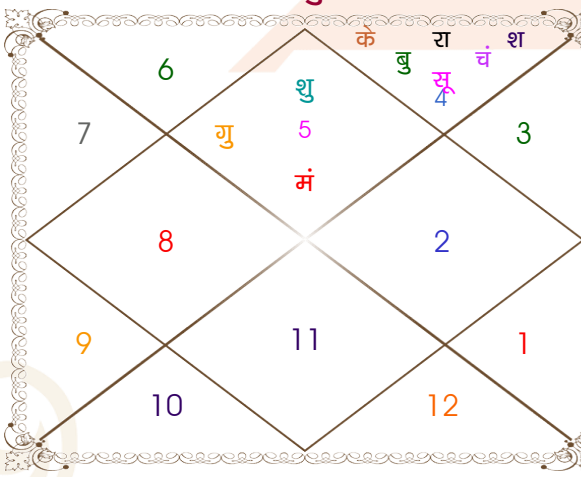

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

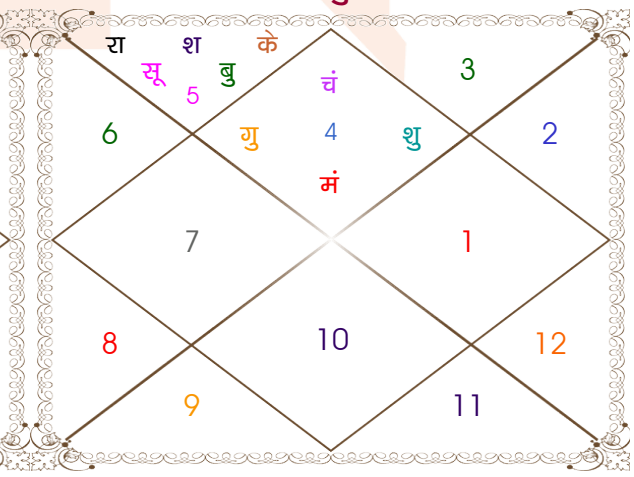

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

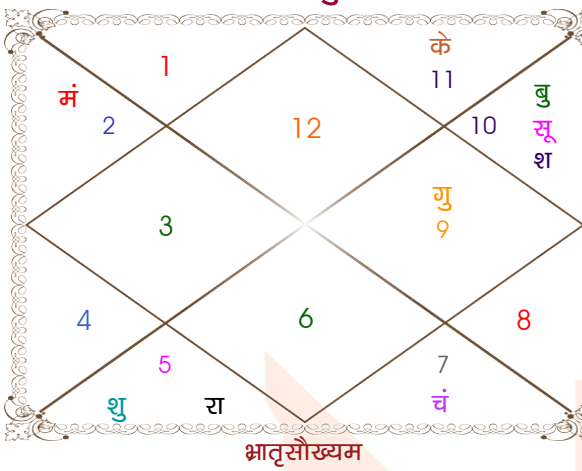

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

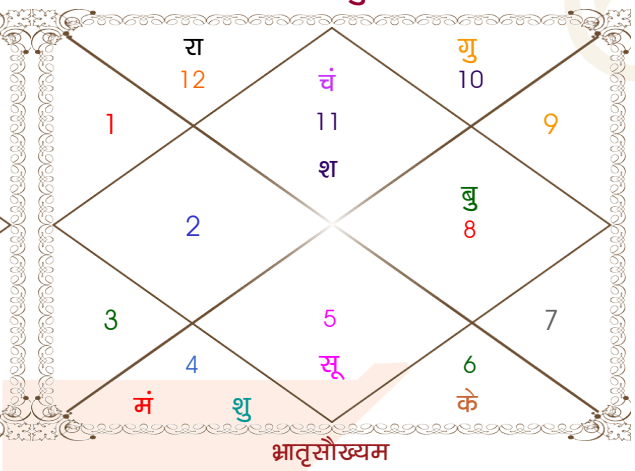

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

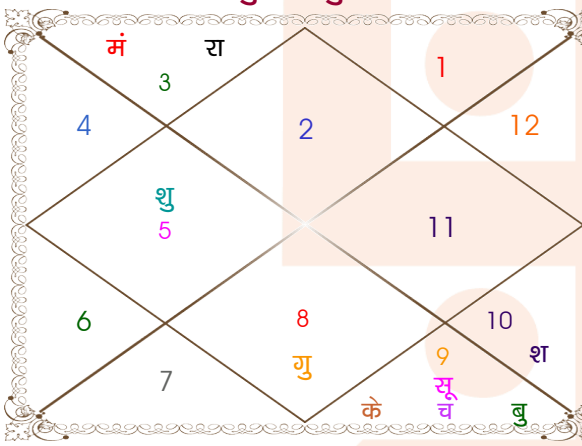

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

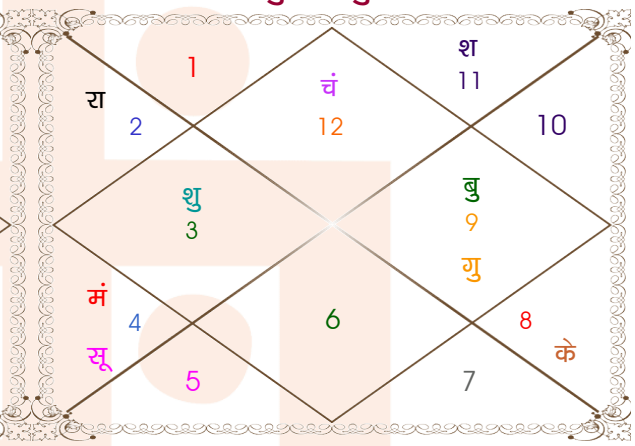

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

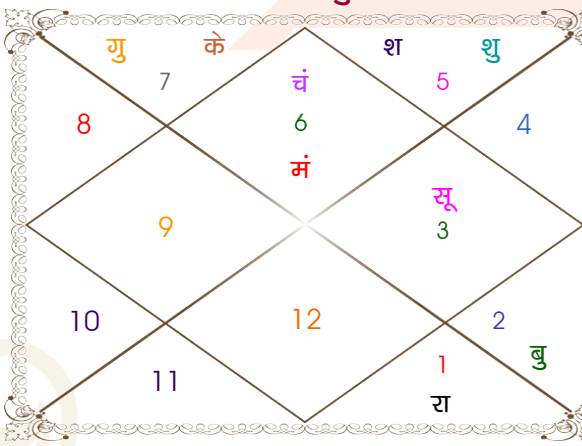

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

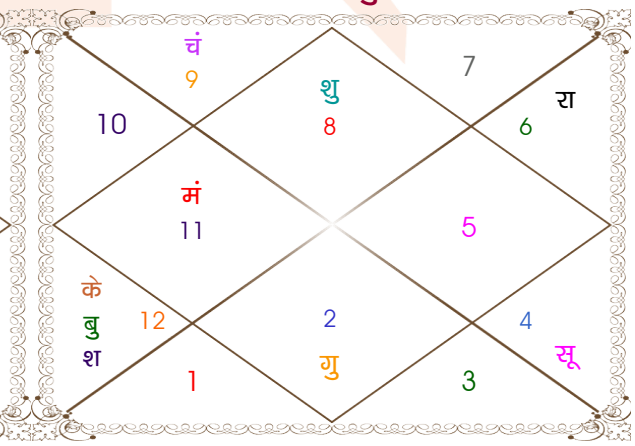

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

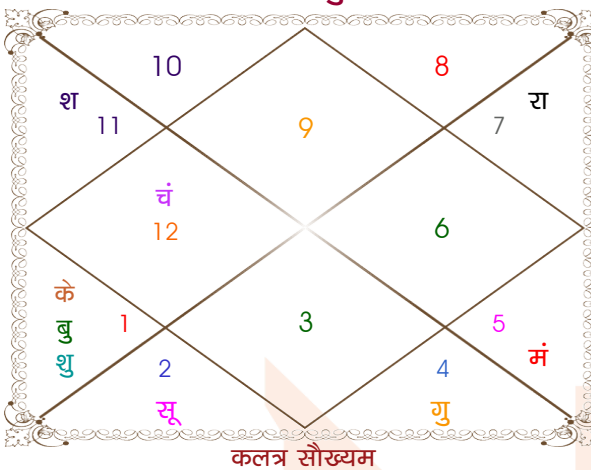

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

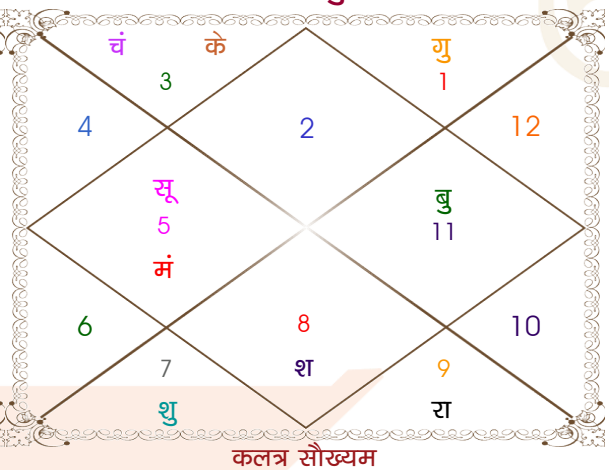

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

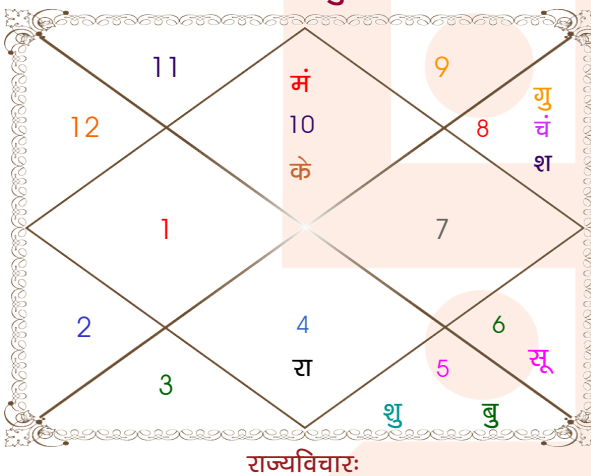

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

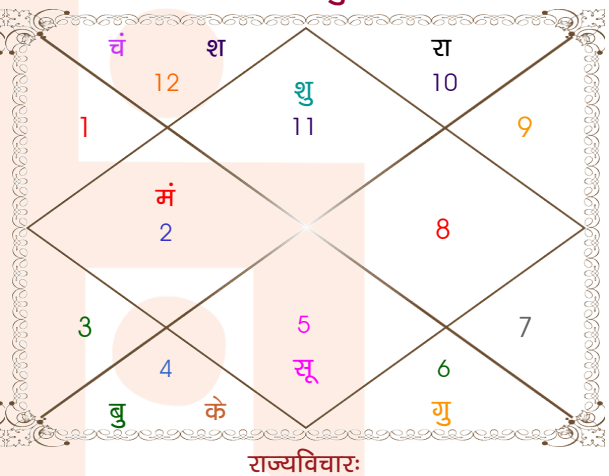

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

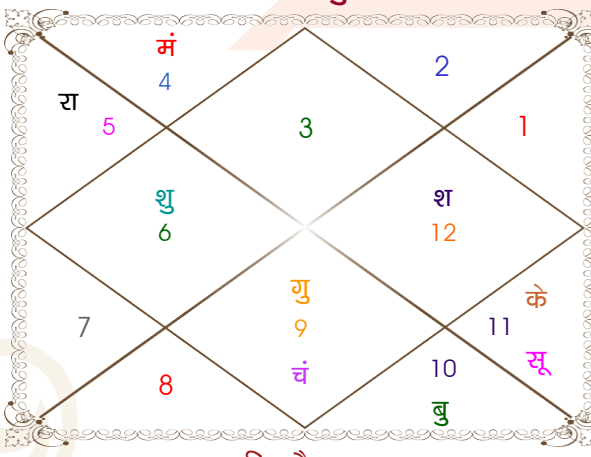

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

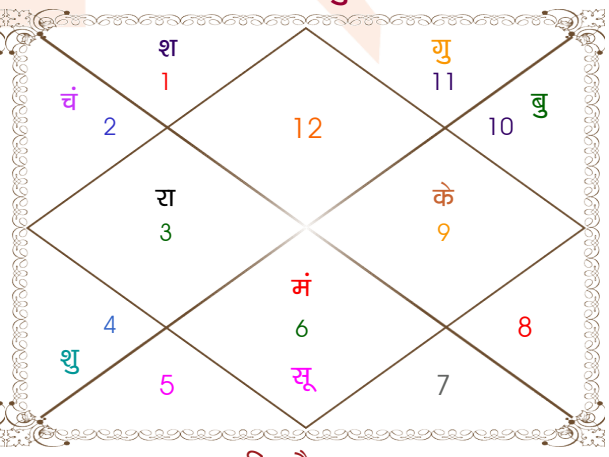

पितृसौख्यम

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

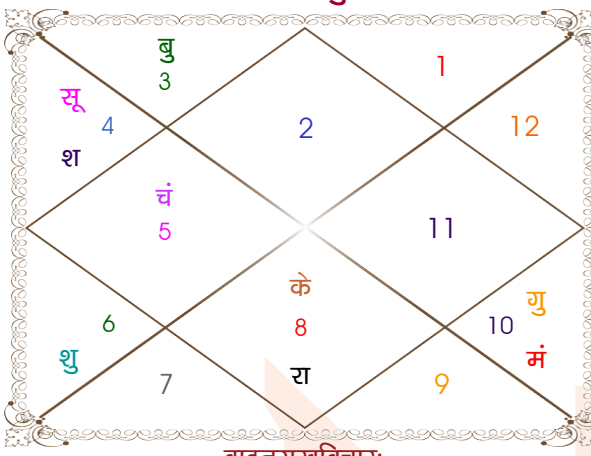

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

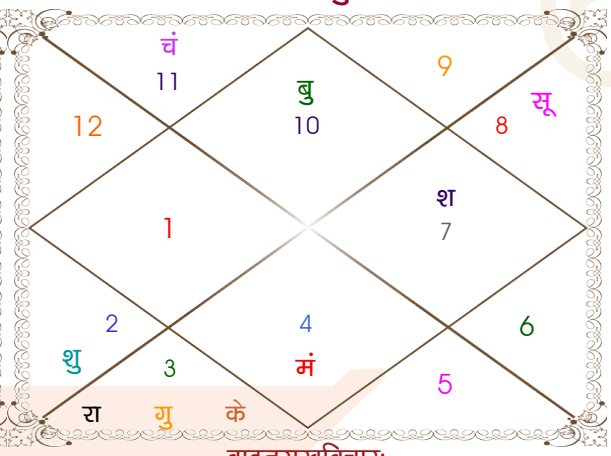

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

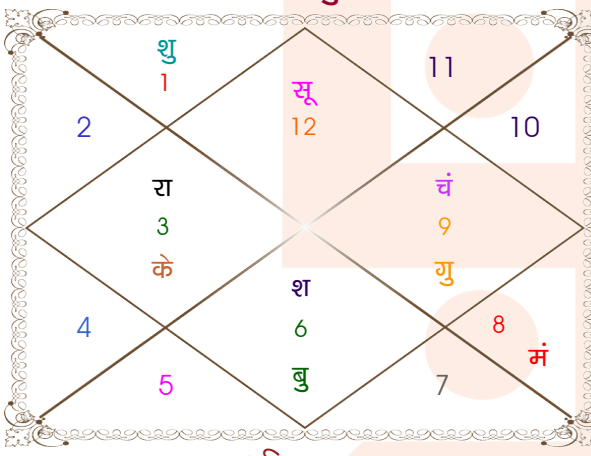

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

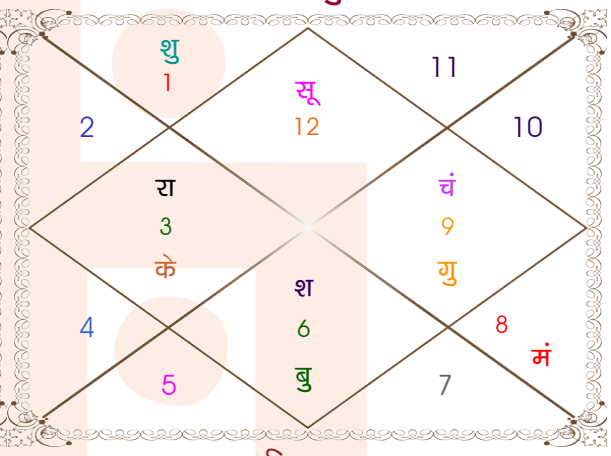

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

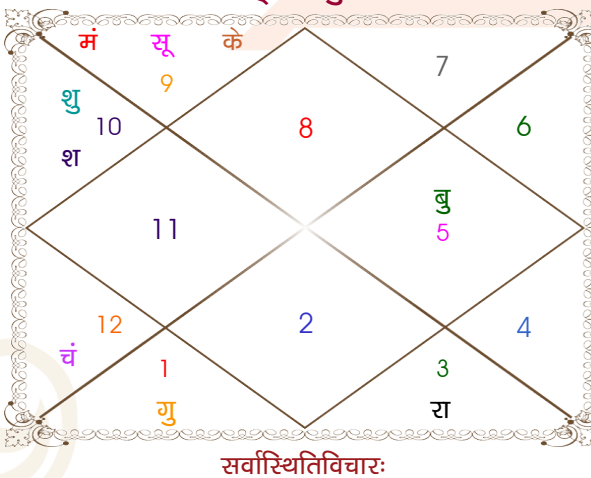

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

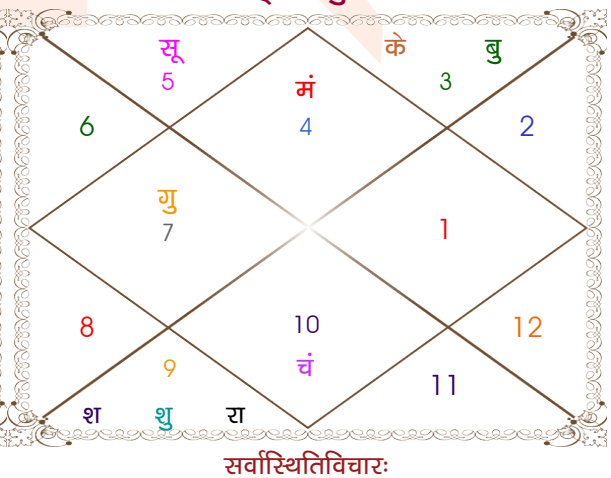

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - Mr.

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र
बुध	सम	सम	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - Ms.

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	शत्रु	---	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	सम	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	4	4	3	3	5	4	3	6	3	4	5	4	48

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	4
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
कुल	4	6	0	4	6	3	3	5	3	4	6	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
कुल	7	3	3	3	2	7	3	3	5	5	5	3	49

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	6
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	6
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	1	7
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	0	1	7
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
कुल	5	3	6	4	4	5	2	5	6	3	1	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	3	2	5	1	6	2	2	4	1	4	6	3	39

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	7
कुल	3	3	3	3	8	2	3	3	1	4	5	1	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	6	3	5	3	5	4	4	5	3	5	6	5	54

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	1	8
गुरु	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
कुल	5	4	2	6	5	4	3	5	3	5	5	7	54

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
कुल	2	6	5	3	7	2	4	5	5	6	6	5	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	5
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	8
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
कुल	8	2	5	8	3	2	5	5	6	5	4	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
कुल	5	4	3	5	4	3	4	4	5	6	4	5	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
चंद्र	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	9
मंगल	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	9
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
कुल	5	6	6	5	3	4	4	5	3	5	3	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	4	3	2	4	2	6	5	4	2	1	4	2	39

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
बुध	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	6
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	3
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
कुल	5	2	3	3	5	2	2	5	3	4	4	1	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	6	4	3	4	3	6	2	5	3	5	5	3	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
सूर्य	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	6	4	4	5	3	3	3	4	4	4	3	6	49

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

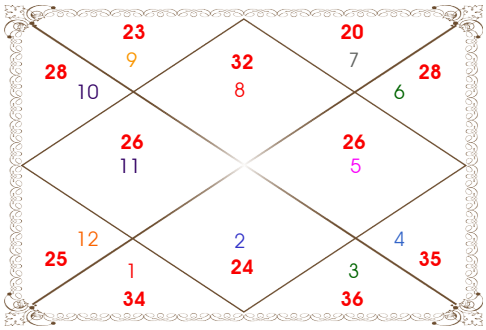

सर्वाष्टकवर्ग

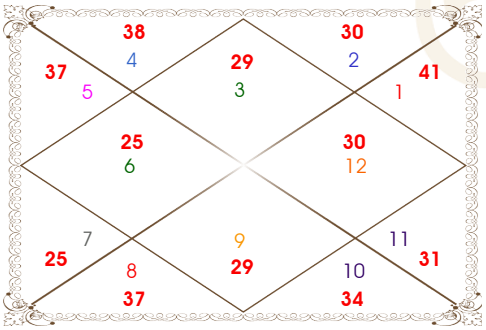

Mr.

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	2	6	5	4	2	1	4	2	4	3	2	39
गुरु	5	6	6	5	2	6	5	3	7	2	4	5	56
मंगल	4	1	4	6	3	3	2	5	1	6	2	2	39
सूर्य	6	3	4	5	4	4	4	3	3	5	4	3	48
शुक्र	5	6	4	5	5	4	3	5	4	3	4	4	52
बुध	5	3	5	6	5	6	3	5	3	5	4	4	54
चंद्र	5	3	7	3	3	3	2	7	3	3	5	5	49
बिन्दु	34	24	36	35	26	28	20	32	23	28	26	25	337
रेखा	22	32	20	21	30	28	36	24	33	28	30	31	335

Ms.

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	6	4	4	5	3	3	3	4	4	4	3	6	49
सूर्य	4	6	0	4	6	3	3	5	3	4	6	4	48
चंद्र	5	3	6	4	4	5	2	5	6	3	1	5	49
मंगल	3	3	3	3	8	2	3	3	1	4	5	1	39
बुध	5	4	2	6	5	4	3	5	3	5	5	7	54
गुरु	8	2	5	8	3	2	5	5	6	5	4	3	56
शुक्र	5	6	6	5	3	4	4	5	3	5	3	3	52
शनि	5	2	3	3	5	2	2	5	3	4	4	1	39
बिन्दु	41	30	29	38	37	25	25	37	29	34	31	30	386
रेखा	23	34	35	26	27	39	39	27	35	30	33	34	382

शोध्य पिंड - Mr.

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	54	127	87	84	153	68	82
ग्रह पिंड	45	25	105	108	82	40	69
शोध्य पिंड	99	152	192	192	235	108	151

शोध्य पिंड - Ms.

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	72	103	85	124	102	112	68	88
ग्रह पिंड	52	35	62	36	57	70	41	41
शोध्य पिंड	124	138	147	160	159	182	109	129

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

राहु 4 वर्ष 5 मास 22 दिन

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
01/10/1991		24/03/1996		24/03/2012	
24/03/1996		24/03/2012		24/03/2031	
	00/00/0000	गुरु	12/05/1998	शनि	28/03/2015
	00/00/0000	शनि	22/11/2000	बुध	05/12/2017
	00/00/0000	बुध	28/02/2003	केतु	13/01/2019
	00/00/0000	केतु	04/02/2004	शुक्र	15/03/2022
	01/10/1991	शुक्र	05/10/2006	सूर्य	25/02/2023
शुक्र	11/10/1992	सूर्य	24/07/2007	चंद्र	25/09/2024
सूर्य	04/09/1993	चंद्र	22/11/2008	मंगल	04/11/2025
चंद्र	06/03/1995	मंगल	29/10/2009	राहु	10/09/2028
मंगल	24/03/1996	राहु	24/03/2012	गुरु	24/03/2031

गुरु 6 वर्ष 9 मास 17 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
28/04/1993		14/02/2000		14/02/2019	
14/02/2000		14/02/2019		14/02/2036	
	00/00/0000	शनि	17/02/2003	बुध	13/07/2021
	00/00/0000	बुध	27/10/2005	केतु	10/07/2022
	00/00/0000	केतु	06/12/2006	शुक्र	10/05/2025
	28/04/1993	शुक्र	05/02/2010	सूर्य	16/03/2026
शुक्र	27/08/1994	सूर्य	18/01/2011	चंद्र	16/08/2027
सूर्य	16/06/1995	चंद्र	18/08/2012	मंगल	12/08/2028
चंद्र	15/10/1996	मंगल	27/09/2013	राहु	01/03/2031
मंगल	21/09/1997	राहु	03/08/2016	गुरु	06/06/2033
राहु	14/02/2000	गुरु	14/02/2019	शनि	14/02/2036

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
24/03/2031		24/03/2048		24/03/2055	
24/03/2048		24/03/2055		24/03/2075	
बुध	20/08/2033	केतु	20/08/2048	शुक्र	24/07/2058
केतु	17/08/2034	शुक्र	20/10/2049	सूर्य	24/07/2059
शुक्र	17/06/2037	सूर्य	25/02/2050	चंद्र	24/03/2061
सूर्य	24/04/2038	चंद्र	26/09/2050	मंगल	24/05/2062
चंद्र	23/09/2039	मंगल	22/02/2051	राहु	24/05/2065
मंगल	19/09/2040	राहु	12/03/2052	गुरु	23/01/2068
राहु	09/04/2043	गुरु	15/02/2053	शनि	24/03/2071
गुरु	15/07/2045	शनि	27/03/2054	बुध	22/01/2074
शनि	24/03/2048	बुध	24/03/2055	केतु	24/03/2075

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
14/02/2036		14/02/2043		14/02/2063	
14/02/2043		14/02/2063		13/02/2069	
केतु	12/07/2036	शुक्र	15/06/2046	सूर्य	04/06/2063
शुक्र	11/09/2037	सूर्य	16/06/2047	चंद्र	03/12/2063
सूर्य	17/01/2038	चंद्र	13/02/2049	मंगल	09/04/2064
चंद्र	18/08/2038	मंगल	16/04/2050	राहु	04/03/2065
मंगल	14/01/2039	राहु	15/04/2053	गुरु	21/12/2065
राहु	02/02/2040	गुरु	15/12/2055	शनि	03/12/2066
गुरु	08/01/2041	शनि	14/02/2059	बुध	09/10/2067
शनि	17/02/2042	बुध	15/12/2061	केतु	14/02/2068
बुध	14/02/2043	केतु	14/02/2063	शुक्र	13/02/2069

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
24/03/2075		24/03/2081		24/03/2091	
24/03/2081		24/03/2091		24/03/2098	
सूर्य	12/07/2075	चंद्र	22/01/2082	मंगल	21/08/2091
चंद्र	11/01/2076	मंगल	23/08/2082	राहु	07/09/2092
मंगल	18/05/2076	राहु	22/02/2084	गुरु	14/08/2093
राहु	11/04/2077	गुरु	23/06/2085	शनि	23/09/2094
गुरु	28/01/2078	शनि	23/01/2087	बुध	20/09/2095
शनि	10/01/2079	बुध	23/06/2088	केतु	16/02/2096
बुध	17/11/2079	केतु	22/01/2089	शुक्र	17/04/2097
केतु	24/03/2080	शुक्र	23/09/2090	सूर्य	23/08/2097
शुक्र	24/03/2081	सूर्य	24/03/2091	चंद्र	24/03/2098

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
13/02/2069		14/02/2079		14/02/2086	
14/02/2079		14/02/2086		15/02/2104	
चंद्र	15/12/2069	मंगल	13/07/2079	राहु	27/10/2088
मंगल	16/07/2070	राहु	31/07/2080	गुरु	22/03/2091
राहु	15/01/2072	गुरु	06/07/2081	शनि	26/01/2094
गुरु	16/05/2073	शनि	15/08/2082	बुध	15/08/2096
शनि	15/12/2074	बुध	13/08/2083	केतु	02/09/2097
बुध	15/05/2076	केतु	09/01/2084	शुक्र	03/09/2100
केतु	15/12/2076	शुक्र	10/03/2085	सूर्य	29/07/2101
शुक्र	15/08/2078	सूर्य	16/07/2085	चंद्र	28/01/2103
सूर्य	14/02/2079	चंद्र	14/02/2086	मंगल	15/02/2104

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
25/09/2024		04/11/2025		10/09/2028	
04/11/2025		10/09/2028		24/03/2031	
मंगल	19/10/2024	राहु	09/04/2026	गुरु	12/01/2029
राहु	19/12/2024	गुरु	26/08/2026	शनि	07/06/2029
गुरु	11/02/2025	शनि	07/02/2027	बुध	16/10/2029
शनि	16/04/2025	बुध	04/07/2027	केतु	09/12/2029
बुध	12/06/2025	केतु	03/09/2027	शुक्र	12/05/2030
केतु	06/07/2025	शुक्र	24/02/2028	सूर्य	28/06/2030
शुक्र	11/09/2025	सूर्य	16/04/2028	चंद्र	13/09/2030
सूर्य	01/10/2025	चंद्र	11/07/2028	मंगल	06/11/2030
चंद्र	04/11/2025	मंगल	10/09/2028	राहु	24/03/2031

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
10/05/2025		16/03/2026		16/08/2027	
16/03/2026		16/08/2027		12/08/2028	
सूर्य	25/05/2025	चंद्र	28/04/2026	मंगल	06/09/2027
चंद्र	20/06/2025	मंगल	28/05/2026	राहु	30/10/2027
मंगल	08/07/2025	राहु	14/08/2026	गुरु	17/12/2027
राहु	24/08/2025	गुरु	22/10/2026	शनि	13/02/2028
गुरु	04/10/2025	शनि	12/01/2027	बुध	04/04/2028
शनि	22/11/2025	बुध	26/03/2027	केतु	25/04/2028
बुध	05/01/2026	केतु	25/04/2027	शुक्र	24/06/2028
केतु	23/01/2026	शुक्र	21/07/2027	सूर्य	13/07/2028
शुक्र	16/03/2026	सूर्य	16/08/2027	चंद्र	12/08/2028

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
24/03/2031		20/08/2033		17/08/2034	
20/08/2033		17/08/2034		17/06/2037	
बुध	27/07/2031	केतु	10/09/2033	शुक्र	06/02/2035
केतु	16/09/2031	शुक्र	10/11/2033	सूर्य	30/03/2035
शुक्र	10/02/2032	सूर्य	28/11/2033	चंद्र	24/06/2035
सूर्य	25/03/2032	चंद्र	28/12/2033	मंगल	23/08/2035
चंद्र	06/06/2032	मंगल	18/01/2034	राहु	25/01/2036
मंगल	28/07/2032	राहु	13/03/2034	गुरु	11/06/2036
राहु	07/12/2032	गुरु	01/05/2034	शनि	22/11/2036
गुरु	03/04/2033	शनि	27/06/2034	बुध	18/04/2037
शनि	20/08/2033	बुध	17/08/2034	केतु	17/06/2037

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
12/08/2028		01/03/2031		06/06/2033	
01/03/2031		06/06/2033		14/02/2036	
राहु	29/12/2028	गुरु	20/06/2031	शनि	09/11/2033
गुरु	03/05/2029	शनि	29/10/2031	बुध	28/03/2034
शनि	27/09/2029	बुध	23/02/2032	केतु	24/05/2034
बुध	06/02/2030	केतु	11/04/2032	शुक्र	04/11/2034
केतु	01/04/2030	शुक्र	27/08/2032	सूर्य	23/12/2034
शुक्र	04/09/2030	सूर्य	08/10/2032	चंद्र	15/03/2035
सूर्य	20/10/2030	चंद्र	16/12/2032	मंगल	12/05/2035
चंद्र	06/01/2031	मंगल	02/02/2033	राहु	06/10/2035
मंगल	01/03/2031	राहु	06/06/2033	गुरु	14/02/2036

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
17/06/2037		24/04/2038		23/09/2039	
24/04/2038		23/09/2039		19/09/2040	
सूर्य	03/07/2037	चंद्र	06/06/2038	मंगल	14/10/2039
चंद्र	29/07/2037	मंगल	06/07/2038	राहु	08/12/2039
मंगल	16/08/2037	राहु	22/09/2038	गुरु	25/01/2040
राहु	01/10/2037	गुरु	30/11/2038	शनि	22/03/2040
गुरु	12/11/2037	शनि	20/02/2039	बुध	13/05/2040
शनि	31/12/2037	बुध	04/05/2039	केतु	03/06/2040
बुध	13/02/2038	केतु	03/06/2039	शुक्र	02/08/2040
केतु	03/03/2038	शुक्र	28/08/2039	सूर्य	20/08/2040
शुक्र	24/04/2038	सूर्य	23/09/2039	चंद्र	19/09/2040

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
14/02/2036		12/07/2036		11/09/2037	
12/07/2036		11/09/2037		17/01/2038	
केतु	23/02/2036	शुक्र	21/09/2036	सूर्य	18/09/2037
शुक्र	19/03/2036	सूर्य	13/10/2036	चंद्र	28/09/2037
सूर्य	26/03/2036	चंद्र	17/11/2036	मंगल	06/10/2037
चंद्र	08/04/2036	मंगल	12/12/2036	राहु	25/10/2037
मंगल	16/04/2036	राहु	14/02/2037	गुरु	11/11/2037
राहु	09/05/2036	गुरु	12/04/2037	शनि	01/12/2037
गुरु	29/05/2036	शनि	18/06/2037	बुध	20/12/2037
शनि	21/06/2036	बुध	18/08/2037	केतु	27/12/2037
बुध	12/07/2036	केतु	11/09/2037	शुक्र	17/01/2038

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
19/09/2040		09/04/2043		15/07/2045	
09/04/2043		15/07/2045		24/03/2048	
राहु	06/02/2041	गुरु	28/07/2043	शनि	17/12/2045
गुरु	10/06/2041	शनि	06/12/2043	बुध	06/05/2046
शनि	05/11/2041	बुध	01/04/2044	केतु	02/07/2046
बुध	17/03/2042	केतु	20/05/2044	शुक्र	13/12/2046
केतु	10/05/2042	शुक्र	05/10/2044	सूर्य	31/01/2047
शुक्र	12/10/2042	सूर्य	15/11/2044	चंद्र	23/04/2047
सूर्य	28/11/2042	चंद्र	23/01/2045	मंगल	19/06/2047
चंद्र	13/02/2043	मंगल	12/03/2045	राहु	14/11/2047
मंगल	09/04/2043	राहु	15/07/2045	गुरु	24/03/2048

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
17/01/2038		18/08/2038		14/01/2039	
18/08/2038		14/01/2039		02/02/2040	
चंद्र	04/02/2038	मंगल	27/08/2038	राहु	13/03/2039
मंगल	16/02/2038	राहु	18/09/2038	गुरु	03/05/2039
राहु	20/03/2038	गुरु	08/10/2038	शनि	03/07/2039
गुरु	18/04/2038	शनि	01/11/2038	बुध	26/08/2039
शनि	22/05/2038	बुध	22/11/2038	केतु	18/09/2039
बुध	21/06/2038	केतु	01/12/2038	शुक्र	20/11/2039
केतु	03/07/2038	शुक्र	26/12/2038	सूर्य	10/12/2039
शुक्र	08/08/2038	सूर्य	02/01/2039	चंद्र	11/01/2040
सूर्य	18/08/2038	चंद्र	14/01/2039	मंगल	02/02/2040

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
24/03/2048		20/08/2048		20/10/2049	
20/08/2048		20/10/2049		25/02/2050	
केतु	01/04/2048	शुक्र	30/10/2048	सूर्य	26/10/2049
शुक्र	26/04/2048	सूर्य	20/11/2048	चंद्र	06/11/2049
सूर्य	04/05/2048	चंद्र	26/12/2048	मंगल	14/11/2049
चंद्र	16/05/2048	मंगल	20/01/2049	राहु	03/12/2049
मंगल	25/05/2048	राहु	24/03/2049	गुरु	20/12/2049
राहु	16/06/2048	गुरु	20/05/2049	शनि	09/01/2050
गुरु	06/07/2048	शनि	27/07/2049	बुध	27/01/2050
शनि	30/07/2048	बुध	25/09/2049	केतु	04/02/2050
बुध	20/08/2048	केतु	20/10/2049	शुक्र	25/02/2050

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
02/02/2040		08/01/2041		17/02/2042	
08/01/2041		17/02/2042		14/02/2043	
गुरु	18/03/2040	शनि	13/03/2041	बुध	09/04/2042
शनि	11/05/2040	बुध	09/05/2041	केतु	30/04/2042
बुध	29/06/2040	केतु	02/06/2041	शुक्र	30/06/2042
केतु	19/07/2040	शुक्र	08/08/2041	सूर्य	18/07/2042
शुक्र	13/09/2040	सूर्य	29/08/2041	चंद्र	17/08/2042
सूर्य	30/09/2040	चंद्र	01/10/2041	मंगल	07/09/2042
चंद्र	29/10/2040	मंगल	25/10/2041	राहु	31/10/2042
मंगल	18/11/2040	राहु	25/12/2041	गुरु	19/12/2042
राहु	08/01/2041	गुरु	17/02/2042	शनि	14/02/2043

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
25/02/2050		26/09/2050		22/02/2051	
26/09/2050		22/02/2051		12/03/2052	
चंद्र	15/03/2050	मंगल	05/10/2050	राहु	21/04/2051
मंगल	27/03/2050	राहु	27/10/2050	गुरु	11/06/2051
राहु	28/04/2050	गुरु	16/11/2050	शनि	10/08/2051
गुरु	26/05/2050	शनि	09/12/2050	बुध	04/10/2051
शनि	29/06/2050	बुध	31/12/2050	केतु	26/10/2051
बुध	29/07/2050	केतु	08/01/2051	शुक्र	29/12/2051
केतु	11/08/2050	शुक्र	02/02/2051	सूर्य	17/01/2052
शुक्र	15/09/2050	सूर्य	10/02/2051	चंद्र	18/02/2052
सूर्य	26/09/2050	चंद्र	22/02/2051	मंगल	12/03/2052

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
14/02/2043		15/06/2046		16/06/2047	
15/06/2046		16/06/2047		13/02/2049	
शुक्र	05/09/2043	सूर्य	04/07/2046	चंद्र	05/08/2047
सूर्य	05/11/2043	चंद्र	03/08/2046	मंगल	10/09/2047
चंद्र	14/02/2044	मंगल	24/08/2046	राहु	10/12/2047
मंगल	25/04/2044	राहु	18/10/2046	गुरु	29/02/2048
राहु	25/10/2044	गुरु	06/12/2046	शनि	05/06/2048
गुरु	05/04/2045	शनि	02/02/2047	बुध	30/08/2048
शनि	15/10/2045	बुध	25/03/2047	केतु	05/10/2048
बुध	05/04/2046	केतु	16/04/2047	शुक्र	14/01/2049
केतु	15/06/2046	शुक्र	16/06/2047	सूर्य	13/02/2049

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा

मंगला 0 वर्ष 2 मास 30 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
01/10/1991		31/12/1991		30/12/1993	
31/12/1991		30/12/1993		30/12/1996	
	00/00/0000	पिंग	09/02/1992	धांय	01/04/1994
	00/00/0000	धांय	10/04/1992	भ्राम	31/07/1994
	00/00/0000	भ्राम	30/06/1992	भद्रि	31/12/1994
	00/00/0000	भद्रि	10/10/1992	उल्क	01/07/1995
	00/00/0000	उल्क	09/02/1993	सिद्ध	30/01/1996
	01/10/1991	सिद्ध	01/07/1993	संक	30/09/1996
सिद्ध	11/10/1991	संक	10/12/1993	मंग	30/10/1996
संक	31/12/1991	मंग	30/12/1993	पिंग	30/12/1996

पिंगला 0 वर्ष 10 मास 6 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
28/04/1993		04/03/1994		04/03/1997	
04/03/1994		04/03/1997		04/03/2001	
	00/00/0000	धांय	04/06/1994	भ्राम	13/08/1997
	00/00/0000	भ्राम	03/10/1994	भद्रि	04/03/1998
	00/00/0000	भद्रि	05/03/1995	उल्क	03/11/1998
	00/00/0000	उल्क	03/09/1995	सिद्ध	14/08/1999
	28/04/1993	सिद्ध	03/04/1996	संक	04/07/2000
सिद्ध	03/09/1993	संक	03/12/1996	मंग	13/08/2000
संक	12/02/1994	मंग	02/01/1997	पिंग	02/11/2000
मंग	04/03/1994	पिंग	04/03/1997	धांय	04/03/2001

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
30/12/1996		30/12/2000		30/12/2005	
30/12/2000		30/12/2005		31/12/2011	
भ्राम	10/06/1997	भद्रि	10/09/2001	उल्क	31/12/2006
भद्रि	30/12/1997	उल्क	11/07/2002	सिद्ध	01/03/2008
उल्क	31/08/1998	सिद्ध	01/07/2003	संक	01/07/2009
सिद्ध	11/06/1999	संक	10/08/2004	मंग	31/08/2009
संक	01/05/2000	मंग	30/09/2004	पिंग	30/12/2009
मंग	10/06/2000	पिंग	09/01/2005	धांय	01/07/2010
पिंग	30/08/2000	धांय	10/06/2005	भ्राम	01/03/2011
धांय	30/12/2000	भ्राम	30/12/2005	भद्रि	31/12/2011

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
04/03/2001		04/03/2006		04/03/2012	
04/03/2006		04/03/2012		05/03/2019	
भद्रि	13/11/2001	उल्क	05/03/2007	सिद्ध	14/07/2013
उल्क	13/09/2002	सिद्ध	04/05/2008	संक	02/02/2015
सिद्ध	03/09/2003	संक	03/09/2009	मंग	14/04/2015
संक	13/10/2004	मंग	03/11/2009	पिंग	03/09/2015
मंग	03/12/2004	पिंग	04/03/2010	धांय	03/04/2016
पिंग	14/03/2005	धांय	03/09/2010	भ्राम	12/01/2017
धांय	13/08/2005	भ्राम	04/05/2011	भद्रि	02/01/2018
भ्राम	04/03/2006	भद्रि	04/03/2012	उल्क	05/03/2019

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
31/12/2011		31/12/2018		31/12/2026	
31/12/2018		31/12/2026		31/12/2027	
सिद्ध	11/05/2013	संक	10/10/2020	मंग	10/01/2027
संक	30/11/2014	मंग	30/12/2020	पिंग	30/01/2027
मंग	09/02/2015	पिंग	10/06/2021	धांय	01/03/2027
पिंग	01/07/2015	धांय	09/02/2022	भ्राम	11/04/2027
धांय	30/01/2016	भ्राम	31/12/2022	भद्रि	01/06/2027
भ्राम	09/11/2016	भद्रि	09/02/2024	उल्क	01/08/2027
भद्रि	30/10/2017	उल्क	10/06/2025	सिद्ध	11/10/2027
उल्क	31/12/2018	सिद्ध	31/12/2026	संक	31/12/2027

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
05/03/2019		05/03/2027		04/03/2028	
05/03/2027		04/03/2028		04/03/2030	
संक	13/12/2020	मंग	15/03/2027	पिंग	13/04/2028
मंग	04/03/2021	पिंग	04/04/2027	धांय	13/06/2028
पिंग	13/08/2021	धांय	04/05/2027	भ्राम	02/09/2028
धांय	14/04/2022	भ्राम	14/06/2027	भद्रि	13/12/2028
भ्राम	05/03/2023	भद्रि	04/08/2027	उल्क	14/04/2029
भद्रि	13/04/2024	उल्क	04/10/2027	सिद्ध	03/09/2029
उल्क	13/08/2025	सिद्ध	14/12/2027	संक	12/02/2030
सिद्ध	05/03/2027	संक	04/03/2028	मंग	04/03/2030

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योगिनी दशा

मंगला 0 वर्ष 2 मास 30 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
31/12/2027		30/12/2029		30/12/2032	
30/12/2029		30/12/2032		30/12/2036	
पिंग	09/02/2028	धांय	01/04/2030	भ्राम	10/06/2033
धांय	10/04/2028	भ्राम	31/07/2030	भद्रि	30/12/2033
भ्राम	30/06/2028	भद्रि	31/12/2030	उल्क	31/08/2034
भद्रि	10/10/2028	उल्क	01/07/2031	सिद्ध	11/06/2035
उल्क	09/02/2029	सिद्ध	30/01/2032	संक	01/05/2036
सिद्ध	01/07/2029	संक	30/09/2032	मंग	10/06/2036
संक	10/12/2029	मंग	30/10/2032	पिंग	30/08/2036
मंग	30/12/2029	पिंग	30/12/2032	धांय	30/12/2036

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
30/12/2036		30/12/2041		31/12/2047	
30/12/2041		31/12/2047		31/12/2054	
भद्रि	10/09/2037	उल्क	31/12/2042	सिद्ध	11/05/2049
उल्क	11/07/2038	सिद्ध	01/03/2044	संक	30/11/2050
सिद्ध	01/07/2039	संक	01/07/2045	मंग	09/02/2051
संक	10/08/2040	मंग	31/08/2045	पिंग	01/07/2051
मंग	30/09/2040	पिंग	30/12/2045	धांय	30/01/2052
पिंग	09/01/2041	धांय	01/07/2046	भ्राम	09/11/2052
धांय	10/06/2041	भ्राम	01/03/2047	भद्रि	30/10/2053
भ्राम	30/12/2041	भद्रि	31/12/2047	उल्क	31/12/2054

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
31/12/2054		31/12/2062		31/12/2063	
31/12/2062		31/12/2063		30/12/2065	
संक	10/10/2056	मंग	10/01/2063	पिंग	09/02/2064
मंग	30/12/2056	पिंग	30/01/2063	धांय	10/04/2064
पिंग	10/06/2057	धांय	01/03/2063	भ्राम	30/06/2064
धांय	09/02/2058	भ्राम	11/04/2063	भद्रि	10/10/2064
भ्राम	31/12/2058	भद्रि	01/06/2063	उल्क	09/02/2065
भद्रि	09/02/2060	उल्क	01/08/2063	सिद्ध	01/07/2065
उल्क	10/06/2061	सिद्ध	11/10/2063	संक	10/12/2065
सिद्ध	31/12/2062	संक	31/12/2063	मंग	30/12/2065

पिंगला 0 वर्ष 10 मास 6 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
04/03/2030		04/03/2033		04/03/2037	
04/03/2033		04/03/2037		04/03/2042	
धांय	04/06/2030	भ्राम	13/08/2033	भद्रि	13/11/2037
भ्राम	03/10/2030	भद्रि	04/03/2034	उल्क	13/09/2038
भद्रि	05/03/2031	उल्क	03/11/2034	सिद्ध	03/09/2039
उल्क	03/09/2031	सिद्ध	14/08/2035	संक	13/10/2040
सिद्ध	03/04/2032	संक	04/07/2036	मंग	03/12/2040
संक	03/12/2032	मंग	13/08/2036	पिंग	14/03/2041
मंग	02/01/2033	पिंग	02/11/2036	धांय	13/08/2041
पिंग	04/03/2033	धांय	04/03/2037	भ्राम	04/03/2042

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
04/03/2042		04/03/2048		05/03/2055	
04/03/2048		05/03/2055		05/03/2063	
उल्क	05/03/2043	सिद्ध	14/07/2049	संक	13/12/2056
सिद्ध	04/05/2044	संक	02/02/2051	मंग	04/03/2057
संक	03/09/2045	मंग	14/04/2051	पिंग	13/08/2057
मंग	03/11/2045	पिंग	03/09/2051	धांय	14/04/2058
पिंग	04/03/2046	धांय	03/04/2052	भ्राम	05/03/2059
धांय	03/09/2046	भ्राम	12/01/2053	भद्रि	13/04/2060
भ्राम	04/05/2047	भद्रि	02/01/2054	उल्क	13/08/2061
भद्रि	04/03/2048	उल्क	05/03/2055	सिद्ध	05/03/2063

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
05/03/2063		04/03/2064		04/03/2066	
04/03/2064		04/03/2066		04/03/2069	
मंग	15/03/2063	पिंग	13/04/2064	धांय	04/06/2066
पिंग	04/04/2063	धांय	13/06/2064	भ्राम	03/10/2066
धांय	04/05/2063	भ्राम	02/09/2064	भद्रि	05/03/2067
भ्राम	14/06/2063	भद्रि	13/12/2064	उल्क	03/09/2067
भद्रि	04/08/2063	उल्क	14/04/2065	सिद्ध	03/04/2068
उल्क	04/10/2063	सिद्ध	03/09/2065	संक	03/12/2068
सिद्ध	14/12/2063	संक	12/02/2066	मंग	02/01/2069
संक	04/03/2064	मंग	04/03/2066	पिंग	04/03/2069

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

1	मूलांक	1
4	भाग्यांक	9
1, 4, 8, 9	मित्र अंक	1, 4, 8, 9
3, 5, 6	शत्रु अंक	3, 5, 6
19,28,37,46,55	शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
रवि, सोम, मंगल	शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
सूर्य, चन्द्र, मंगल	शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
कन्या, कुम्भ	मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
कुम्भ, कर्क, कन्या	मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
गणेश	अनुकूल देवता	गणेश
मूंगा	शुभ रत्न	पन्ना
संगमूंगी	शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
मोती	भाग्य रत्न	नीलम
ताम्र	शुभ धातु	कांसा
रक्त	शुभ रंग	हरित
दक्षिण	शुभ दिशा	उत्तर
सूर्योदय के बाद	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन	दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
मल्का	दान अन्न	मूँग
घी	दान द्रव्य	घी

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Mr.

जीवन रत्नः	मूंगा	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मोती	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
कारक रत्नः	माणिक्य	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
शुभ उपरत्नः	पुखराज	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख

Ms.

जीवन रत्नः	पन्ना	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	नीलम	भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
कारक रत्नः	हीरा	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च, सन्तति सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/09/1991-06/03/1993
साढेसाती प्रथम ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती तृतीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2009-15/11/2011

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती तृतीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2009-15/11/2011
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022
साढेसाती प्रथम ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती तृतीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/06/2039-06/03/2041

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती तृतीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/06/2039-06/03/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052
साढेसाती प्रथम ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/08/2068-25/10/2070

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/08/2068-25/10/2070
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धनार्जन

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Mr.

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।

6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Ms.

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	श्वान	मार्जार	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	बुध	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	मिथुन	मिथुन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.00		

कुल : **24 / 36**

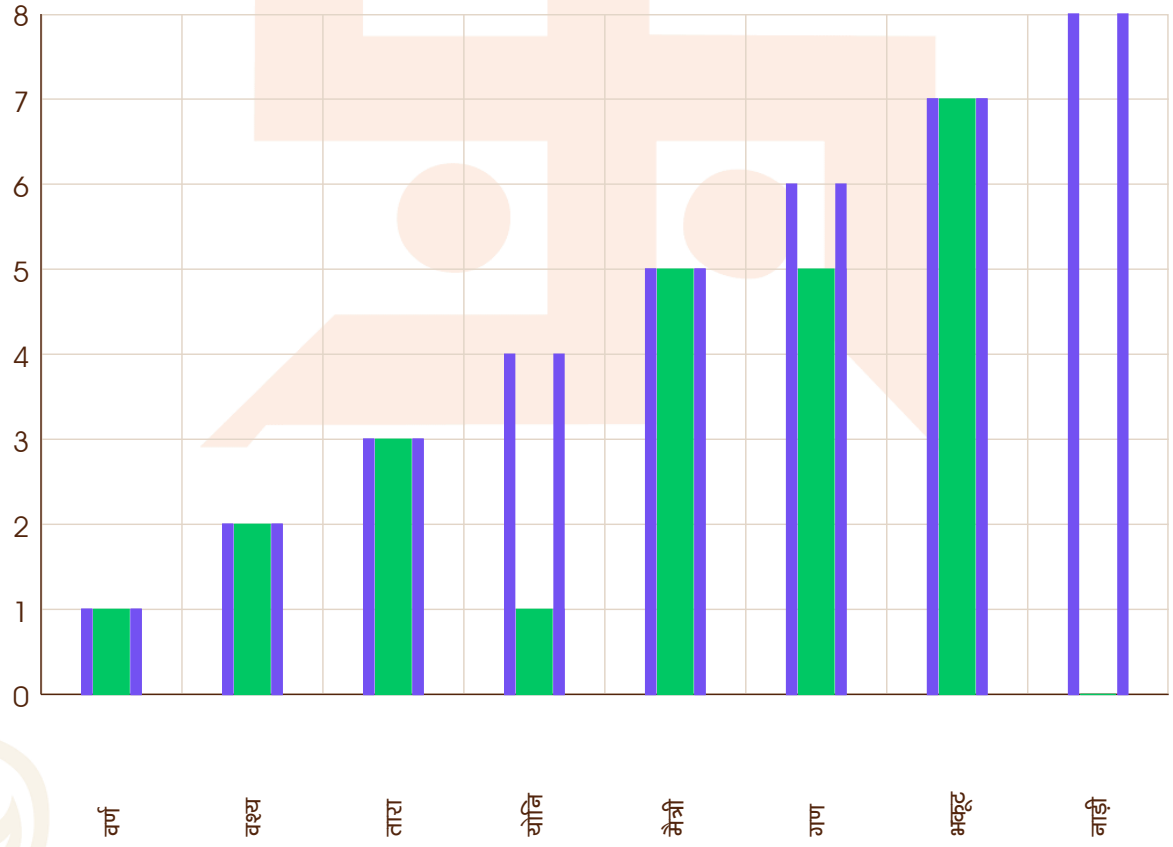

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के नक्षत्र भिन्न हैं तथा राशियां एक है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Mr. का नक्षत्र आर्द्रा है।

Mr. का वर्ग सिंह है तथा Ms. का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

Ms. मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Mr. का वर्ण शूद्र है तथा Ms. का वर्ण भी शूद्र है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों के स्वभाव, व्यवहार, दृष्टिकोण, पसन्द-नापसन्द में समानता रहेगी। साथ ही दोनों में इतना प्रेम होगा कि लगेगा कि दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों। दोनों के बीच गहरा प्रेम, सद्भाव, साहचर्य एवं पारस्परिक समझ बनी रहेगी। दोनों घर की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को उन्नत एवं सुदृढ़ बनाने के लिए साथ मिलकर कार्य करते रहेंगे।

वश्य

Mr. का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं Ms. का वश्य भी द्विपद अर्थात मनुष्य है अर्थात दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। Mr. एवं Ms. दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसंद/नापसंद तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

Mr. की तारा अतिमित्र तथा Ms. की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। Mr. हमेशा Ms. के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

योनि

Mr. की योनि श्वान है तथा Ms. की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव

ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Mr. एवं Ms. दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि Mr. एवं Ms. दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

Mr. का गण मनुष्य तथा Ms. का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में Ms. सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर Mr. व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण Mr. अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

Mr. एवं Ms. दोनों की राशि एक समान ही है इसलिये यह अति उत्तम मिलान है। ऐसा मिलान Mr. एवं Ms. तथा परिवार के चतुर्दिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इन्हें अनेक रूपों में ईश्वरीय कृपा जैसे - सौभाग्य, सम्पत्ति, समाज में मान-सम्मान तथा योग्य संतान आदि प्राप्त होगी।

नाड़ी

Mr. की नाड़ी आद्य है तथा Ms. की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। Mr. एवं Ms. दोनों की आद्य नाड़ी होने से, दम्पत्ति वात से संबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो सकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसे दम्पत्ति जिनकी नाड़ी एक ही हों, उनकी संतानें रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में संकेन्द्रण की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो सकते हैं अथवा बचपन या

किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो सकती है।

मेलापक फलित

स्वभाव

Mr. और Ms. की जन्म राशि वायुतत्व युक्त मिथुन राशि है। अतः Mr. और Ms. के मध्य स्वाभाविक, मानसिक तथा भावनात्मक स्तर पर पूर्ण समानता रहेगी तथा एक दूसरे को पूर्ण स्नेह एवं सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे फलतः इनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार यह मिलान अतिउत्तम रहेगा।

Mr. और Ms. दोनों की राशियों का स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से वार्तालाप में दोनों अत्यधिक चतुर होंगे तथा अपनी बाक्पटुता से एक दूसरे को प्रभावित करेंगे। वे जीवन में समान सिद्धातों एवं मूल्यों का अनुपालन करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

Mr. और Ms. राशि परस्पर प्रथम प्रथम भाव में पड़ती है जो एक शुभ भकूट है। इसके प्रभाव से इनमें परस्पर स्नेह, सहयोग एवं समर्पण की भावना रहेगी तथा एक दूसरे के अस्तित्व का सम्मान करते हुए अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। वे सच्चे मित्रों की भांति एक दूसरे के दोषों की उपेक्षा करते हुए शांति एवं प्रसन्नता बनाए रखेंगे तथा एक दूसरे की सुख सुविधाओं का भी पूर्ण ध्यान रखेंगे जिससे संबधों में मधुरता रहेगी।

Mr. और Ms. का वश्य मानव है। अतः Mr. और Ms. की अभिरूचियों में पूर्ण समानता रहेगी तथा शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकताएं भी बराबर रहेंगी। साथ ही एक दूसरे की काम भावनाओं को समझने तथा शांति एवं सन्तुष्टि प्रदान करने में भी सफल होंगे जिससे दाम्पत्य जीवन का सुख एवं आनंद चरमोत्कर्ष सीमा पर रहेगा।

Mr. और Ms. का वर्ण शूद्र है। अतः कार्यक्षेत्र में दोनों गम्भीर एवं कर्तव्यपरायण रहेंगे तथा कार्य क्षमताएं भी समान होंगी फलतः कार्य क्षेत्र एवं आर्थिक स्थिति सर्वदा सुदृढ़ रहेगी।

धन

Mr. का जन्म अतिमित्र तथा Ms. का सम्पत नामक तारा में हुआ है। इसके प्रभाव से Ms. एक धनवान तथा भाग्यशाली महिला होंगी तथा Ms. के शुभ प्रभाव से उनकी आर्थिक स्थिति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर सम रहेगा। अतः स्वपरिश्रम से ही इच्छित धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही मंगल का भी कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार Mr. और Ms. आरामदायक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

Mr. और Ms. को लाटरी, सट्टे या अन्य स्रोतों से अनायास धन प्राप्ति की संभावना होगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के भौतिक संसाधनों का वे उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरक्त वे जायदाद तथा आभूषण आदि को भी अर्जित करने में समर्थ

होंगे।

स्वास्थ्य

Mr. और Ms. दोनों की आद्य नाड़ी है। इससे नाड़ी दोष का आभास होता है परन्तु दोनों की राशि का स्वामी एक ही ग्रह है तथा नक्षत्र भिन्न भिन्न हैं। अतः इससे उपरोक्त नाड़ी दोष समाप्त हो जाता है। साथ ही मंगल का भी Mr. और Ms. दोनों में से किसी के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव नहीं है। अतः उत्तम स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मिलान अच्छा रहेगा तथा इसके शुभ प्रभाव से वे उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहेंगे तथा परस्पर प्रभाव से सुख तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Mr. और Ms. का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Mr. और Ms. के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Ms. के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Ms. को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Ms. को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Mr. और Ms. सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Mr. और Ms. का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Ms. के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि Ms. धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से Ms. के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी Ms. का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी Ms. से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य

स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

Mr. तथा उनकी सास के संबधों में सामान्यतया मधुरता ही रहेगी। साथ ही आपस में किसी प्रकार के मतभेद या तनाव के भाव की न्यूनता रहेगी। वे अपनी सास के प्रति श्रद्धा तथा सम्मानजनक व्यवहार रखेंगे तथा उन्हें अपनी माता के समान ही आदर प्रदान करेंगे। साथ ही सपत्नीक वह समय समय पर ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में Mr. के संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण दोनों के मध्य काफी वैचारिक विभिन्नता तथा अन्य मतभेद रहेंगे परन्तु यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन किया जाय तो इनमें न्यूनता आ सकती है। साथ ही साले एवं सालियों से Mr. के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग, स्नेह तथा सहानुभूति प्राप्त होगी एवं परस्पर मित्रता का भाव रहेगा। इस प्रकार ससुराल के पक्ष का दृष्टिकोण Mr. के प्रति उत्साहवर्द्धक नहीं रहेगा तथा सामंजस्य से ही इसमें अनुकूलता वनी रहेगी।

अंक ज्योतिष फल

Mr.

आपका जन्म दिनांक एक होने से आपका मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा के व्यक्ति होंगे। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगे उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगे। इच्छा शक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा। लम्बे समय तक जो भी विचार बना लेंगे उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगे। आपके प्रेमएवं स्थायी बनें रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगे। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि आप जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप आपको मंजूर नहीं होगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में आपके अंदर मौजूद रहेंगे। इसके प्रभावश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति आपके अंदर प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करेंगे। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की आपकी चाहत बनी रहेगी। जोकि आप अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त करेंगे।

Ms.

आपका जन्म दिनांक 28 है। दो एवं आठ के योग से एक आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा आठ का शनि है। इन तीनों ही ग्रहों का संयुक्त प्रभाव आपके जीवन में आयेगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य जीवनदाता है एवं ब्रह्माण्ड में स्थिर ग्रह है। अन्य सभी ग्रह तो सूर्य के चक्कर लगाते हैं। अतः सूर्य ग्रह के प्रभाववश आप एक स्थिर प्रकृति की महत्वाकांक्षी, उदीयमान, प्रतिभाशाली महिला के रूप में पहचानी जायेंगी। आप स्वतंत्र विचार धारा की धनी होंगी। पराधीन कार्य करने में असुविधा महसूस होगी। आप प्रत्येक कार्य को स्वतंत्रता पूर्वक निष्पक्ष संपादन करने की हिमायती रहेंगी। इससे आपको प्रतिद्वन्दियों के विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप स्थायी एवं दीर्घ कालीन संबंध बनाने पर विश्वास करेंगी। आपकी कोशिश हमेशा यही रहेगी कि जब भी आप किसी के साथ मित्रता, व्यापारिक, सामाजिक, राजनैतिक अथवा प्रेम, रोमांस, इत्यादि के जो भी संबंध बनाऐं उनमें स्थायित्व रहे।

सूर्य जिस तरह प्रकाशित ग्रह है। उसी भाँति आप भी अपने जीवन में सदा

प्रकाशित रहना पसन्द करेंगी। समाज वर्ग विशेष में मुखिया की भूमिका आप बखूबी निभाने की क्षमता रखेंगी। अपनी मेहनत के बल पर आप सभा-सोसायटी, संगठनों इत्यादि में प्रमुख पद को प्राप्त करेंगी।

अंक दो के स्वामी चन्द्र के कारण आपमें कल्पनाशीलता अच्छी रहेगी। आप जो भी सृजन करेंगी उसमें मौलिकता रहेगी। अंक आठ का स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से कभी-कभी आपके अन्दर नैराश्य भाव जाग्रत होगा। आलस्य में वृद्धि होगी और बनते हुये कार्यों में रुकावटें आयेंगी।

Mr.

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होंगे।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रूझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

Ms.

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगी। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगी, जहाँ आपकी हुकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगी। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगी। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगी।

लग्न फल

Mr.

ज्योतिषीय संरूपण आकृति से यह परिलक्षित हो रहा है कि आपका जन्म जयेष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में वृश्चिक लग्न में हुआ था। वृश्चिक लग्नोदय काल धनु राशि का नवमांश एवं मीन राशि का द्रेष्काण भी उदित था। आपका जन्म कालिक प्रभाव यह सूचित कर रहा है कि आप अपना विचार तो किसी अन्य कार्य के सम्बन्ध में रखते हैं, परंतु आप उद्देश्य के विपरीत कार्य सम्पादन करते हैं। आपके जीवन का लक्ष्य है कि आप पर्याप्त मात्रा में धनोपार्जन कर लें ताकि अपना आनन्दमय जीवन सुखपूर्वक बिता सके।

आपके बाहरी भाव से ऐसा परिदृश्य हो रहा है कि आप उच्चकोटि के धार्मिक प्राणी हैं। आप वार्ताक्रम में यह आश्वस्त कर देते हैं कि वस्तुतः क्या ठीक अथवा क्या गलत हैं। आपका आचरण धार्मिक है तथा आप उच्चस्तरीय धार्मिक प्राणी हैं। परन्तु आपकी आन्तरिक भावना यह है कि आप विपरीत बातों के प्रति अपना धार्मिक उपदेश प्रदान करें। वास्तव में आपका झुकाव धन प्राप्ति की ओर रहती हैं। आपके मन में धन प्राप्ति के प्रति प्रबल उत्कंठा रहती हैं कि अपने जीवन का सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त करें।

आप किसी भी प्रकार की अभद्रता पूर्ण कार्य-कलाप को त्यागने के लिए सक्षम हैं। आप पूर्ण शिक्षित, कुशाग्रबुद्धि के चालाक व्यक्ति हैं। आपमें यह विशेषता विद्यमान है कि आप जनसामान्य को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। क्योंकि आपमें भाषा के प्रति अभिरूचि रहती है। आप काव्य-कला और सामान्य भाषा के ज्ञाता है। आपके लिए व्यवसायों में अनुकूल प्रेस, प्रकाशन, विज्ञापन, प्रचार, पुस्तकों का प्रकाशन तथा वाद्य यंत्र का निर्माण कार्य उपयुक्त है। यदि आपकी अभिरूचि हो तो आप अभियंत्रिकी कार्य भी सम्पादन कर सकते हैं।

आपको अच्छी प्रकार से यथेष्ठ धन प्राप्ति के सभी सुन्दर सुअवसर प्राप्त होंगे। परन्तु आप बहुतायत में धन का व्यय भी करेंगे। आप चाहते है कि जनसामान्य के दृष्टिकोण में प्रभावशाली दृश्य हों तथा मूल्यवान साज शय्याओं से युक्त घर सुसज्जित दिखें तथा आधुनिक सौन्दर्य से युक्त हो।

आप प्रेम प्रसंग में भी कुछ उपयुक्त हो सकते हैं। आप अपने जीवन संगिनी के प्रति श्रद्धा रखते हुए अत्यधिक द्रवित हो जाते हो। परन्तु यदि वह अस्वस्थ्यता प्रदर्शित करती है तो आप इसे भाग्य की विडम्बना समझकर अन्य स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने को उद्यत हो जाते हो तथा इसे दुखद अनुभव करते हो तथा इसे संभावित घटना समझकर परित्याग करते हो। आप अपनी जीवन संगिनी के चयन के पूर्व आप अपने घरेलू कार्य-क्रम को विधिवत सम्पादित करते रहेंगे। आप अपने उत्तम जीवन-संगिनी के चयन एवं उत्तम तारतम्यता हेतु उस स्त्री का चयन करें जिसका जन्म वृश्चिक, कर्क, वृष, कन्या अथवा मकर राशि में हुआ हो।

आपका वासनात्मक उन्माद आपके स्वास्थ्य को समस्याग्रस्त बना सकता है। जिससे आपका गुप्तांग प्रभावित हो जायगा। अतः रोमांचकारी सीमा पर सावधानी पूर्वक चलें।

इसके अतिरिक्त अन्य रोग यथा बवासीर एवं ट्यूमर रोग से भी आपका स्वास्थ्य अद्योगति को प्राप्त कर सकता है। अतः आपके लिए उचित मार्ग यह है कि आप अपने स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण सतर्क रहें, अन्यथा आपके जीवन के 13 वें 27 वें एवं 49 वें वर्ष में गंभीर स्वास्थ्य बाधा उपस्थित हो जाएगी। यदि आप सुनियोजित ढंग से समुचित सतर्कता बरतें तो उपरोक्त रोगों से सुरक्षित रह सकते हैं।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग, नारंगी, लाल, पीला एवं क्रीम रंग है। परंतु आप सफेद, हरा एवं नीले रंगों का परित्याग करे।

आपके लिए अंकों में अनुकूल 1, 2, 3, 4 एवं 9 अंक अनुकूल एवं ग्राह्य है। परंतु अंक 5, 6 एवं 8 अंक अव्यवहारणीय है।

असाप्ताहिक दिनों में आपका भाग्यशाली दिन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार, है। आपके लिए वास्तव में शुक्रवार, बुधवार एवं शनिवार का दिन अनुकूल नही है।

Ms.

आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ था। आपके जन्म समय मिथुन लग्न के साथ-साथ वृषभ का नवमांश एवं कुंभ राशि का द्रेष्काण भी उदित हुआ था। आपके जन्म प्रभाव से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप भाग्यशाली महिला हैं। क्योंकि आप आरामदायक एवं प्रसन्नतम जीवन व्यतीत करेंगी। परंतु आप कार्य करने से विमुख हो जाती हैं फिर आप किस प्रकार उपयुक्त कार्य सुनिश्चित कर सकेंगी। अतः आप कार्य के संबंध में पूर्णरूपेण विचार कर उपयुक्त एवं अनुकल कार्य सुनिश्चित कर लें।

आपकी ढुल-मुल नीति के कारण आप मानसिक रूप से व्यस्त रहती हैं एवं प्रतिक्षण अन्य लुभावने कार्य-व्यवसाय को प्रारंभ करने हेतु व्यग्रता पूर्वक प्रवृत हो जाती हैं। इसलिए आप अधीर होकर, तत्काल ही परिणाम प्राप्त करना चाहती हैं। जिस वजह से आप प्रलोभन में पड़ कर अनेकों कार्यों को अपूर्ण छोड़ देती हैं। फलस्वरूप आपके कठिन श्रम से कोई लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। अतः आप भविष्यकाल के लिए निर्णय करके सुदृढता पूर्वक कार्य संपादन करें।

आप में आश्चर्य जनक ग्रहणात्मक शक्ति विद्यमान है। आप दूसरो की बातों को समझने एवं ग्रहण करने में समर्थ हैं। आप किसी भी प्रकार का अंदाज लगाने के बाद भी अपने अनुकूल और विचार पूर्वक कार्य संपादन करती हैं।

आपके पास लोग निर्देशन प्राप्त करने तथा आपकी राय जानने आयेंगे। सामान्यतया किसी भी वस्तु विषय में आपका निर्णय ले लेना तथा पुनः निर्णय बदल देना यह उपयुक्त है।

आपका अच्छा स्वभाव आपको अपने मित्रों एवं संबंधियों के मध्य प्रसिद्धि प्रदान करता हैं। आपके संबंधित सभी लोग आपको प्रतिष्ठित करते हैं। अर्थात् प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं।

अन्य दूसरी बात यह है कि आपकी प्रसिद्धि आपको तेज, कुशग्र बुद्धि का, निष्कपट, विश्वासी एवं दानशील प्रवृत्ति का बनाता है।

आप अपनी उच्च महत्वकांक्षा की प्राप्ति हेतु समर्पित हो कर कोई भी कार्य प्रारंभ करें। आप चांद को स्पर्श करने की अभिलाषा नही करती परंतु आप कुछ भी चाहे जो कुछ भी प्राप्त करके ही संतुष्टि एवं प्रसन्नता का अनुभव करना चाहती हैं।

यदि आप एकाग्रता पूर्वक कार्य संपादन करें तो आपके अपने रास्ते से धन की प्राप्ति होगी। आप मुख्यतः अपने जीवन के 25वें वर्ष में अति समृद्ध हो जाएंगे। साथ ही धन का अपव्यय निरर्थक हो जाने से बहुत बड़ी उदासीनता एवं चिंता का कारण भी बनेगा।

आप पारिवारिक सदस्यों के साथ बहुत आरामदेह एवं सुखप्रद जीवन बिताएंगी। आपका शांति प्रदायक अपना भवन होगा तथा बच्चों के साथ अनेक प्रकार से सुविधाजनक एवं आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगी। उत्तम तो यह है कि आप अपने लिए अनुकूल जीवन संगी का चयन कर लें जिसका जन्म लग्न/राशि तुला, कुंभ, सिंह एवं मेष राशि हो।

आप भ्रमण प्रिय हैं। आप अपने मित्र मंडली का विस्तार करेंगी। आपके संपर्क के अनेक मित्रगण विस्तृत रूपेण पूर्ण समर्पित भाव से आपका सहयोग करेंगे।

स्पष्टतया आपके उत्तम स्वास्थ्य की सुनिश्चितता बनी हुई है। परंतु आपको संभाव्य शारीरिक आघात के प्रति रक्षित करना चाहिए। ताकि यक्ष्मा तपेदिक, श्वांस नली की विकृति एवं उदर संबंधी विकृति रोग की परेशानी से सुरक्षित रह सकें।

आपके लिए पेशा, वकालत, शैक्षणिक कार्य, पुस्तक प्रकाशन एवं पत्रकारिता के व्यवसाय अनुकूल हैं। आपके लिए बुधवार, एवं शुक्रवार, का दिन अनुकूल हैं, तथा मंगलवार रविवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन कठिन एवं हानिप्रद प्रमाणित होगा। शनिवार मध्य फलदायक है।

आपके लिए लाभदायक, प्रभावी एवं अनुकूल अंक 3 एवं 7 अंक है। इसके अतिरिक्त अंक 4 एवं अंक 8 सर्वथा प्रतिकूल अंक है।

आप सफेद रंग के प्रति आकर्षित हैं परंतु इसे त्यागकर अपने लिए अनुकूल रंग पीला गुलाबी, बैगनी, हरा एवं नीला रंग के वस्त्रादि का व्यवहार करें। काला एवं लाल रंग आपके लिए प्रतिकूल रंग है।

नक्षत्रफल

Mr.

आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका शूद्र वर्ण, सिंह वर्ग, आद्य नाड़ी, श्वान योनि तथा मनुष्य गण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आधाक्षर "छ" होगा।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगे साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगे। दया एवं करूणा के स्थान पर कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे। तथा समीपस्थ सम्बन्धियों एवं आप प्रिय रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।
प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगे तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगे। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगे एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।
मानसागरी

आपके मन में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव भी रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे।

शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।
बृहज्जातकम्

Ms.

आप पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध हैं। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, गण देव, नाड़ी आद्य तथा योनि मार्जार होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "ह" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा हरीश।

आपका स्वभाव अत्यन्त ही शान्त तथा सहनशील होगा। कठिन संकट की घड़ी में भी आपको किसी प्रकार की घबराहट या उतावलापन नहीं होगा। आप अपने जीवन में समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों के उपभोग करने वाले पुरूष होंगे। शारीरिक दृष्टि से आप अच्छे स्वास्थ्य से युक्त होकर गौरवर्ण के तथा सुन्दर होंगे। भाग्य बल पर आप खूब उन्नति करेंगे। समाज में आपकी लोकप्रियता आपके कल्याणकारी कार्यों के द्वारा रहेगी क्योंकि आप सभी वर्गो की भलाई के लिए कार्य करेंगे। साथ ही आप पुत्र तथा मित्रों से भी हमेशा युक्त रहेंगे।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

आप का स्वभाव अच्छा तथा चाल चलन उत्तम रहेगा। यदा कदा आपकी मति में दुष्टता का भाव उत्पन्न होगा फलस्वरूप आप दुष्कर्म करने की ओर प्रेरित होंगे। जीवन में आप हमेशा तृष्णा से आतुर रहेंगे तथा इससे आपकी तृप्ति कभी नहीं होगी। लेकिन सन्तोष का भाव भी आपके मन में रहेगा। किसी वस्तु या द्रव्य की अल्प प्राप्ति में ही पूर्ण रूप से सन्तुष्टि का अनुभव करेंगी।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

ज्ञानालोक से आप प्रकाशित रहेंगे तथा कठिन से कठिन विषयों का आपको ज्ञान रहेगा। समाज में आप धन तथा बल के प्रभाव से कीर्तिवान कहलाएंगे। आप लेखन कार्य के प्रति आकर्षित रहेंगे तथा कविता सृजन या रचना में आप सफलता प्राप्त करेंगे।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा शास्त्रों के ज्ञान प्राप्ति के लिए आप इनके अध्ययन में सतत् तत्पर रहेंगे। आप शुभ रत्न तथा सोने से बनाए गये गहनों से सुशोभित रहेंगे। दानशीलता का भाव भी आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा द्रव्य एवं भूमि से भी आप युक्त रहेंगे।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

राशिफल

Mr.

आप मिथुन राशि में पैदा हुए हैं। अतः आपके नेत्र श्यामवर्ण के होंगे तथा बालों में घुंघरालापन होगा। आपके शरीर के सारे अंग सुन्दर, स्वस्थ एवं सुडौल रहेंगे। इसके साथ ही नासिका भी उन्नत होगी । शास्त्रों के अध्ययन तथा ज्ञान प्राप्त करने की आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा अपने परिश्रम से शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप दूत अथवा सन्देशवाहक के कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र एवं तीक्ष्ण होगी । तीक्ष्णता के फलस्वरूप आप सम्मुख व्यक्ति के मनोभावों को जानने में सफल रहेंगे। आपका सामाजिक व्यवहार अत्यन्त ही विनम्र तथा विनय शील रहेगा फलतः समाज से यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगे। वाणी आपकी श्रेष्ठ एवं प्रिय होगी जिससे श्रोता आपसे आकर्षित रहेंगे तथा आपकी प्रशंसा करेंगे। इसके अतिरिक्त आप हंसने तथा हंसाने के कार्य में भी निपुण होंगे तथा आपका हास्य प्रिय स्वभाव होगा। संगीत से आपका लगाव रहेगा तथा नृत्यशास्त्र के आप अच्छे जानकार होंगे।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योड्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपकी हथेली मत्स्य चिन्ह से सुशोभित रहेगी तथा नसें शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होंगी। आपका रूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। काव्य लेखन की प्रतिभा स्वाभाविक रूप से आप में रहेगी तथा अपने जीवन में समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त होकर आप अपना जीवन व्यतीत करेंगे। सौभाग्य से आप युक्त रहेंगे लेकिन स्त्री से हमेशा पराजित रहेगें एवं उसके वश में रहेंगे।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आयु आपकी पूर्ण रहेगी तथा लम्बे समय तक आप जीवन का उपभोग करते रहेंगे। आप भ्रमण या यात्रा के प्रति रूचिशील रहेगे तथा सुदूर क्षेत्रों की यात्रा या भ्रमण रूचि रहेगी। साथ ही घर के अन्दर रहकर भी शान्ति का अनुभव करेंगे।

दीर्धायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

समाज में आप अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगे। सर्वजनों से आपके मैत्रीपूर्ण संबंध होंगे तथा वे आपका पूर्ण सम्मान करेंगे। स्त्री वर्ग के आप प्रिय होंगे तथा सभी आपको प्रिय एवं आदरणीय समझेंगे। आप अपनी योग्यता, प्रतिभा तथा सद्व्यवहार से समाज में गौरवान्वित होंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप अपने भाषण या लेखन कार्य में कठिन शब्दों का प्रयोग करेंगे परन्तु लोग उसे सुगमता पूर्वक ग्रहण करेंगे। आप अपने बन्धुजनों, रिश्तेदारों तथा अन्य सामाजिक लोगों के कल्याण कारी कार्यों में हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति पित तथा कफ से युक्त रहेगी तथा आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आप की आखें चंचल होंगी। संगीत तथा नृत्य से आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा आपकी कीर्ति आपके सद्व्यवहार तथा धनैश्वर्य एवं विद्धता के कारण दूर दूर तक विख्यात रहेगी। शरीर की आपकी पूर्ण लम्बाई होगी तथा भाषण देने में आप अति कुशल होंगे। आप जिस चीज का संकल्प करेंगे उसे पूर्ण करके ही छोडेंगे चाहे उसके लिए आपको कितना ही परिश्रम क्यो न करना पडे। साथ ही आप न्यायवादी भी होंगे।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां दोनों शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि शुभकार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए अशुभ समय चल रहा हो मानसिक उद्विग्नता या शारीरिक

व्याकुलता हो रही हो, व्यापार या नौकरी में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से प्रातः तथा सायं काल गणेश जी के शुभ दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार का व्रत रखना चाहिए। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, गुड़, घी आदि पदार्थो का दान करना चाहिए तथा बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप करवाने चाहिए। इससे शुभ फलों में अभिवृद्धि होगी तथा अशुभ फलों का नाश होगा।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं शीं बुधाय नमः।

Ms.

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप की आखें थोड़ी लालिमा लिए हुए श्याम वर्ण की तथा बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सारे अंग कोमलता लिए पुष्ट तथा सुडौल होंगे एवं नासिका भी उन्नत होगी। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में आप अभ्यासरत रह कर ज्ञान प्राप्त करेंगी। दूतिका कार्य या सन्देशों के आदान प्रदान में आप निपुणता का प्रदर्शन करेंगी। आप अत्यन्त तीव्र बुद्धि की होंगी तथा अपनी इसी बुद्धि के द्वारा अपने समीपस्थ अन्य जनों की चित्त की बातों को जानने में सफल सिद्ध होंगी। समाज के लोगों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही विनयशील एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप मधुर वाणी बोलेंगी जिससे अन्य जनों को प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। आप हंसने तथा हंसाने की शौकीन होंगी तथा आजीवन हास्य युक्त रहेंगी। संगीत से आपका अनन्य प्रेम रहेगा तथा नृत्य शास्त्र की आप विशेषज्ञा होंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योड्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपके हाथ में मछली का चिन्ह हो सकता हैं। आपके कद की ऊँचाई पूर्ण होगी। लेखन कार्य में नैसर्गिक रूप से आपकी रूचि रहेगी तथा काव्य सृजन में आप सफलता प्राप्त करेंगी। आप अपने जीवन में समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखसंसाधनों की उपभोग करने वाली होंगी। साथ ही पुरूषवर्ग को आप अपने वश में रखने में सफलता प्राप्त करेंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घजीवी होंगी तथा सदैव हास्य प्रिय रहेंगी। हंसने तथा हंसाने के कार्य को आप प्रिय समझेंगी। आप घूमने या यात्रा करने में भी उत्सुक रहेंगी तथा घर में रहकर भी सुख

की अनुभूति प्राप्त करेंगी।

दीर्धायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आपकी मित्रता तथा सामाजिक क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा इनमें आप खूब लोकप्रिय रहेंगी। पुरूषों के प्रति आपका तीव्राकर्षण रहेगा तथा उनके मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय समझी जाएंगी। साथ ही आप अपनी प्रतिभा तथा सत्कार्यों से समाज में कीर्ति तथा गौरव भी अर्जित करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप अपने लेखों तथा भाषणों में श्लिष्टयुत स्पष्ट वाक्यों का अधिकांश प्रयोग करेंगी जिससे सामान्य जन भी समझने में सफल रहेंगे आप अपने बन्धुवर्ग के तथा समाज के सभी वर्गों की भलाई के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी प्रवृति पित्त कफ से युक्त होगी एवं चाल चलन उत्तम तथा प्रशंसनीय रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपके नेत्र हमेशा चंचलता से युक्त रहेंगे। संगीत एवं नृत्य के प्रति आप समर्पित रहेंगी तथा अपने अच्छे व्यवहार, अच्छे कार्य तथा धन एवं वैभव के द्वारा कीर्ति को प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगी। अपने मन में एक बार आप जिस बात को सोच लेंगी उसे पूर्णरूप से सम्पन्न करके ही रहेंगी। यह आपके दृढ़संकल्प का परिचायक होगा। इसके साथ ही भाषण देने की कला में भी आप विशेष चतुर होंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आपके लिए आषाढ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां कृष्ण तथा शुक्ल दोनों पक्षों की, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार तृतीय प्रहर तथा धनु राशि स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों

को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें अन्यथा हानि योग बनता हैं। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा आदि या अन्य अशुभ फल घटित हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको प्रातः तथा सायं काल नित्य नियमित रूप से श्री गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार का भी उपवास करना चाहिए ऐसा करने से आपके अशुभ प्रभाव दूर होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, मिश्री, घी, गुड़ आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

पाया विचार

Mr.

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड़ित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

Ms.

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

गण फलादेश

Mr.

आपका मनुष्य गण में जन्म हुआ हैं। अतः आप देवता तथा ब्राहमणों में हार्दिक श्रद्धा रखेंगे तथा नित्य नियमित रूप से पूजार्चन करेंगे। यदा कदा आप जीवन में अहंकार का भी प्रदर्शन करेंगे। आपका मन दया तथा करूणा के सद्भाव से हमेशा युक्त रहेगा तथा आप यथाशक्ति दीन दुःखियों को सहयोग प्रदान करेंगे। आप पूर्ण रूप से बलयुक्त रहेंगे। आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओं के विशेषज्ञ होंगे तथा इनका प्रदर्शन भी सफलता पूर्वक करेंगे।। शास्त्राध्ययन में आपकी रूचि रहेगी तथा अपने परिश्रम से ज्ञानार्जन करने में सफल रहेंगे। आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ रहेगा। इसके साथ ही आपके द्वारा बहुत से लोग सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

आप आजीवन धनैश्वर्य वैभव तथा सुखों का उपभोग करेंगे। आपकी आखें भी आकार में विशाल होगी तथा आप एक कुशल निशानेबाज भी होंगे। इसके अतिरिक्त नगरवासियों पर पूर्ण प्रभाव डालने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके शरीर का वर्ण गौर होगा।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः।
गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे।।
मानसागरी

Ms.

आप देव गण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी वाणी अत्यन्त श्रेष्ठ एवं मधुर होगी जिसे सुनकर श्रोताओं को हर्षानुभूति होगी। आप सरल बुद्धि की स्वामिनी होगी तथा बिना किसी अतिरिक्त परिश्रम से सादगी पूर्ण ढंग से अपने विचारों को प्रकट करेंगी। एवं उसी प्रकार अन्य जनों के विचारों को भी ग्रहण करेंगी। आप सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगी तथा इसे रूचिपूर्वक भक्षण करेंगी। गुणों के मध्य भेद करने में आप सफल होंगी । तथा स्वयं विद्वानों द्वारा वर्णित उच्च गुणों से सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आपको आजीवन धन वैभव तथा ऐश्वर्य की कमी नहीं रहेगी तथा इससे आप हमेशा सुशोभित रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

आपका शरीर सुन्दर, गौरवर्ण, स्वस्थ तथा पुष्ट रहेगा। आप दानी स्वभाव की होंगी

तथा अवसरानुकूल इस प्रवृति का निर्वाह करती रहेंगी इससे आपको समाज में मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप सादगी पसन्द होंगी तथा कार्य का आडम्बर या दिखावा आपको पसन्द नहीं रहेगा। साथ ही आप एक विदुषी भी हो सकती हैं।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।
अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत।।
मानसागरी

योनी फलादेश

Mr.

श्वान योनि में जन्म होने के कारण आप हमेशा कार्य करने में तत्पर रहेंगे। बिना कार्य के आप खाली नहीं बैठेंगे। उत्साह भी पूर्ण रूप से आपके मन में विद्यमान रहेगा। अतः सोत्साह कार्य सम्पन्न करेंगे। आप स्वभाव से ही निर्भय होंगे तथा बहादुरी से समस्याओं का सामना करोगे। लेकिन अपने भाई बन्धुओं से आपका परस्पर मेल नहीं रहेगा परन्तु मां बाप के आप सच्चे सेवक होंगे तथा तन, मन, धन से आजीवन उनकी सेवा करेंगे।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

Ms.

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही पराक्रमी एवं हिम्मत से कार्य करने वाली होंगी। आप अपने समस्त कार्यों को चतुराई से सम्पन्न करेंगी। मीठा भोजन तथा मीठा पेय आपके लिए अभिरूचिकारक होंगे। इनके सेवन से आपको अत्यन्त आनन्दाभूति होगी। भय का आप में सर्वथा अभाव रहेगा तथा निर्भयता पूर्वक जीवन पथ पर चलती रहेंगी। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में दुष्टता का समावेश होगा। अतः दुष्कर्मों को करने में भी आपकी प्रवृति उत्पन्न होगी।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

ग्रह फल – सूर्य

Mr.

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

Ms.

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

ग्रह फल – चन्द्र

Mr.

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

Ms.

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

ग्रह फल – मंगल

Mr.

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

Ms.

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

ग्रह फल - बुध

Mr.

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

Ms.

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

ग्रह फल – गुरु

Mr.

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

Ms.

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

ग्रह फल – शुक्र

Mr.

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

Ms.

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

ग्रह फल – शनि

Mr.

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

Ms.

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

ग्रह फल – राहु

Mr.

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

Ms.

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

ग्रह फल – केतु

Mr.

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

Ms.

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

Mr.

आपके जन्मसमय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यता वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होते हैं। इनमें शारीरिक बल की प्रचुरता रहती है अतः परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ये अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग में सम्माननीय समझे जाते हैं। ये अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं तथा आत्मिक शक्ति की भी इनमें प्रबलता रहती है।

धन संग्रह के प्रति भी इनकी रूचि रहती है तथा धर्नाजन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित में इनकी विशेष रूचि रहती है तथा इस क्षेत्र में उनको सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। निर्भीकता तथा लगनशीलता का भी भाव आप में विद्यमान होगा। अतः कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। विज्ञान गणित या मेडिकल के क्षेत्र में आप विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे। धनसंग्रह में भी आपकी रूचि होगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग असुविधा महसूस करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भावना से नहीं बल्कि बुद्धि द्वारा संचालित होंगे। अतः सामान्य रूप से आप प्रसन्नतापूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि की प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे मानसिक शांति भी बनी रहेगी। पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही आप में विद्यमान होगा तथा इन गुणों से आप अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। इससे आप धनैश्वर्य अर्जित करेंगे तथा अन्य भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिनका आप आनंदपूर्वक उपभोग करेंगे परन्तु यदा कदा तेजस्विता के स्थान पर उग्रता या क्रोध का असमय प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानियां उत्पन्न होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव अवश्य रहेगा परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में आप लोकप्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको वांछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर मिलता रहेगा इस प्रकार आप स्वस्थ बलवान पराक्रमी तेजस्वी धनसंग्रह कर्ता एवं परिश्रमी पुरूष होंगे तथा

स्वपुरूषार्थ से जीवन में इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक विनम्र उदार एवं हास्य प्रवृति के व्यक्ति होते हैं तथा बुद्धिमता का भाव उनके चेहरे से परिलक्षित होता है। इनमें स्वाभिमान का भाव विद्यमान रहता है तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं धनैश्वर्य से सम्पन्न रहते है। वे कार्यों को अत्यंत ही सोच समझकर सम्पन्न करते हैं तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से उनका सम्पर्क बना रहता है। संगीत एवं कला के प्रति इनकी रूचि रहती है तथा नवीन सिद्धांतों या मूल्यों का प्रतिपादन करने में समर्थ रहते हैं। इसके अतिरिक्त गणित लेखन या संपादन के क्षेत्र में इनको सफलता प्राप्त होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को आप बुद्धिमतापूर्वक सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा सरकारी कार्यों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा वाणी में भी मधुरता रहेगी। साथ ही शांत विनम्र एवं हास्य प्रवृति के कारण अन्य जनों को प्रभावित तथा आकर्षित करने में समर्थ रहेंगी। कला एवं संगीत के प्रति आप रूचिशील रहेंगी तथा प्रयत्न से इस क्षेत्र में मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो सकती है। लेखन गणित, सम्पादन या व्यापार संबंधी कार्यों में आप उन्नति प्राप्त करके समाज में प्रतिष्ठित महिला के रूप में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ रहेंगी।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। जीवन में समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में आप सफल होंगी तथा धनैश्वर्य एवं वैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आप एक विदुषी महिला होंगी फलतः अपनी विद्वता से समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगी।

धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव होगा तथा निष्ठापूर्वक आप धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही अवसरानुकूल आप सामाजिक जनों के मध्य उदारता तथा दानशीलता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी फलतः सामाजिक प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में सतत वृद्धि होती रहेगी। धर्म की आप ज्ञाता होंगी तथा गूढ़ से गूढ़ विषय को हृदयंगम करने में समर्थ होंगी।

व्यापार के प्रति आपके विशेष रूचि होगी तथा इसके द्वारा आप धनवान एवं विख्यात होंगी। संगीत एवं कला में भी आप समयानुसार अपनी रूचि का प्रदर्शन करती रहेंगी।

सांसारिक ऐश्वर्य से आप युक्त होंगी। तथा सामान्यतया आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता से युक्त ही रहेगा।

इस प्रकार आप शांत उदार हास्य प्रवृति युक्त एवं विदुषी महिला होंगी तथा जीवन में समस्त सुखों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Mr.

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरूष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रूचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरूष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

Ms.

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक भावुक प्रवृति की होंगी तथा यदा कदा अधिक वार्तालाप भी करेंगी। समाज में आप एक सम्मानीया महिला रहेंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी स्पष्ट एवं मधुर रहेगी जिससे सम्मुख व्यक्ति आपसे प्रभावित रहेगा। साथ ही अपने विचारों को बिना किसी असुविधा के अन्य लोगों के समक्ष प्रस्तुत करेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे ।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आपकी उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की समय समय पर प्राप्ति होती रहेगी। आप सामान्यतया सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करने में रूचिशील रहेंगी लेकिन मिष्ठान आपका विशेष प्रिय रहेगा परन्तु इसके अधिक उपयोग से आपको कोई शारीरिक परेशानी भी हो सकती है अतः इसका अधिक मात्रा में उपयोग कम ही करें। परिवार में आप समय समय पर धार्मिक या मांगलिक उत्सवों का भी आयोजन करती रहेंगी। आप अपने विचारों की पुष्टि के लिए हमेशा ठोस तर्को को प्रस्तुत करेंगी जिससे लोग आपसे प्रभावित तथा सहमत रहेंगे। पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा

तथा सहयोग में सदैव तत्पर रहेंगे। अतः आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

Mr.

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी अच्छी रहेगी एवं किसी भी विषय का ज्ञान आसानी से प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके लिए वे कर्तव्य परायण तथा आज्ञाकारी होंगे तथा आपका भी उनके प्रति गहरा लगाव रहेगा। पारिवारिक शान्ति एवं खुशहाली के लिए आप एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आप एक पराक्रमी तथा साहसी पुरूष होंगे तथा परिश्रमशील कार्यो को करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप नीति के भी ज्ञाता होंगे एवं मंत्रणा या सलाह संबंधी कार्य आसानी से सम्पन्न करेंगे। सांसारिक परेशानियों एवं समस्याओं का समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे तथा किसी भी कार्य को तब तक सम्पन्न करेंगे जब तक कि उसमें सफलता प्राप्त न कर लें। जीवन में संचार साधनों यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन संबंधी सुविधाएं अर्जित करेंगे तथा इनका उपभोग करते समय स्वयं को अन्य जनों से श्रेष्ठ अनुभूति करेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी गहरी रूचि रहेगी। समस्त भौतिक सुखों का भी उपभोग करेंगे। आपकी समय समय पर दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करेंगे। साथ ही इनसे आपको ख्याति प्राप्त होगी तथा सामाजिक सम्मान में भी वृद्धि होगी। समाचार पत्र तथा अन्य सूचना संबंधी लेखों को आप चाव से पढ़ेंगे तथा रिक्त समय में आप इसका पूर्ण सदुपयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त आप बातचीत एवं विचार से शांत प्रकृति, पुत्र.पौत्र से युक्त, गुरू तथा मित्र प्रेमी, धनवान तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध रहेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श, विशाल हृदय एवं साहसी महिला होंगी। आपका अपने संबंधियों, मित्रों एवं भाई बहिनों के प्रति पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी तथा उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी । पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भूलने की सीमा तक क्षमा कर देंगी। इस राशि के प्रभाव से आप प्रशासनिक या कोई उच्चाधिकार प्राप्त पद अर्जित करने में समर्थ हो सकती हैं। इसके साथ ही भाई बहिनों से आज्ञा पालन तथा कर्तव्य परायणता के भाव की सर्वदा अपेक्षा करेंगी यदि वे ऐसा नहीं करते तो आप अत्यंत ही क्रोध का प्रदर्शन भी करेंगी।

आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा आपकी स्मरण शक्ति अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी तथा किसी भी बस्तु को एक बार देख या उसके बारे में सुनकर उसे काफी समय तक याद रखेंगी। उच्च शिक्षा, दर्शन शास्त्र या लेखन संबधी कार्यो में भी आप रूचिशील रहेंगी

तथा यत्नपूर्वक इनका अध्ययन करने में तत्पर रहेंगी। आधुनिक संचार साधनों यथा टेलीफोन, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहेगी एवं आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप नीति संबंधी ज्ञान भी रखेंगी तथा समाचार पत्र पत्राचार या लेखन से भी आपको लाभ होगा। संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा अवसरनुकूल इससे अपना मनोरजंन करेंगी। आपकी दूर समीप की यात्राएं भी समय समय पर होती रहेंगी तथा इससे आपको ख्याति तथा धनार्जन भी होगा। प्रकाशन के क्षेत्र में भी आपकी रूचि रहेगी। इसके अतिरिक्त एक योग्य सूचना अधिकारी या संवाददाता के रूप में भी सफल हो सकती हैं।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Mr.

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सासंसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके पास आधुनिक सुख संसाधनों की बहुलता रहेगी। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी आपका यथोचित स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपको आवश्य प्राप्ति होगी। भाईयों के प्रभाव एवं सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे। इससे आपके ऐश्वर्य तथा वैभव में वृद्धि होगी तथा परिश्रमी एवं पराक्रमी स्वभाव होने के कारण अन्यत्र से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से शीध्र एवं विशिष्ट लाभ के योग बनते हैं। अतः अचल सम्पत्ति पर ही अधिक निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सामान्य रूप से आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से परिपूर्ण होगा तथा इसकी स्वच्छता एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप यथोचित प्रबंध करेंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी युक्त होंगे तथा युवावस्था से ही इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा वह भौतिकतावादी भी होगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा एवं अवसरानुकूल उनसे आप वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति कर सकते है। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी सुख दुख में उनको पूर्ण सहयोग देंगे लेकिन परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में मधुरता कम ही होगी अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर लेंगे लेकिन स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन करना पड़ेगा। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा करें तो यह आपके लिए उत्तम रहेगा तथा उसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। अतः आपको तकनीकी पाठ्य क्रम पर ही विशेष केन्द्रित रहना चाहिए।

Ms.

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आपको प्रचुर मात्रा में भौतिक सुख-संसाधनों एवं उपकरणों की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी। अतः अपने इन गुणों से भी आपको भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा समाज में भी आपका उच्चस्तर बना रहेगा।

जीवन में चल एवं अचल संपत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगी तथा इनसे आपके ऐश्वर्य एवं समृद्धि में अभिवृद्धि होगी। साथ ही पुत्र के प्रभाव से आपको धन समपत्ति का लाभ होगा। बृहस्पति के प्रभाव से आप एक प्रभावशाली महिला होंगी अतः जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपके पास प्रचुरता होगी। इसके अतिरिक्त वांछित ऐश्वर्य एवं समृद्धि से भी आप युक्त होंगी जिससे प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा यह उत्तम क्षेत्र में होगा। साथ ही घर सुन्दर एवं आकर्षक होगा एवं समस्त आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। इसको सुन्दर एवं आकर्षक बनाए रखने में आप नित्य तत्पर होंगी तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसी प्रकार का निर्देश प्रदान करेंगी। आपका घर किसी उत्तम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपके संबंधो में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन भी आपको प्राप्त होगा तथा युवावस्था से ही आप इसका उपयोग करने में समर्थ होंगी।

आपकी माता शिक्षित बुद्धिमती एवं सौम्य स्वभाव की महिला होंगी तथा अपने सद्व्यवहार से सबको प्रसन्न रखेंगी। पारिवारिक जनों का वह पूर्ण रूप से ध्यान रखेंगी। परिवार के सभी सदस्य भी उनका पूर्ण सम्मान एवं आज्ञा का पालन करेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर आपको विशिष्ट आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग करती रहेंगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आप प्रारंभ से ही अध्ययनशील प्रवृति की महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक तथा श्रेणी को अर्जित करने लगेंगी। अतः स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगी। साथ ही अच्छी श्रेणी लेकर आप अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करेंगी। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में प्रबल वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं संबंधियों तथा मित्रगणों से भी पूर्ण प्रोत्साहन, आदर तथा स्नेह मिलेगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Mr.

आपके जन्म समय में पंचम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने सम्स्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की भी क्षमता विद्यमान होगी जिससे आपको वांछित सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा आपके इस गुण से अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे। आप अपनी तीव्र बुद्धि से कठिन से कठिन समस्याओं का भी उचित समय पर समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि कम ही होगी लेकिन आधुनिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान या तकनीकी क्षेत्र में आप पूर्ण रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इन क्षेत्रों में आप कोई शोध कार्य या नवीन सिद्धांत के प्रतिपादन में भी समर्थ हो सकते है। इस प्रकार अपनी विद्वता से आप समाज में सम्मान जनक स्तर अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में मीन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में यद्यपि आपकी रूचि कम होगी परन्तु आपका प्रेम भावुकता से हीन होगा तथा इससे आदर्शवादिता, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि कोण होगा एवं भावनात्मक आकर्षण की ही प्रबलता होगी। अतः आप प्रेम- प्रसंग में सफल भी हो सकते है।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान एवं आदर का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी समान्यतया वे तत्पर होंगे परन्तु वे स्वतन्त्र प्रवृति के होंगे अतः यदा-कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते है। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चपहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। वृद्धावस्था में बच्चों से आपको प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सेवा एवं सहयोग भी मिलता रहेगा जिससे आप वृद्धावस्था में सुख की अनुभूति करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी सिद्ध होंगे तथा प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में विशेष उन्नति का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा दीक्षा का आधुनिक परिवेश में प्रबन्ध करेंगे तथा किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे जिससे वे जीवन में अच्छी उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके आपकी आकाक्षांओं को पूर्ण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अपने कार्यो में निपुण एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा वे भी उन्हें वांछित स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

Ms.

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगीं। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगी। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्यौतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विदुषी के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी ।

शुक्र की राशि की पंचमभाव में प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप में रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते है। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगी तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्द्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

Mr.

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपके विरोधी या शत्रु कोई उच्चाधिकारी या उच्च व्यक्ति होंगे। साथ ही आपके शत्रुओं की संख्या भी अधिक रहेगी तथा समाज में प्रत्येक क्षेत्र में आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। यद्यपि आपके सेवक सभी अच्छे एवं ईमानदार होंगे परन्तु यदा कदा उनकी चोरी की आदत से आप किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आपके गुप्त रहस्यों के बारे में भी वे जानकारी रखेंगे तथा अवसरानुकूल अन्य जनों के समक्ष आपके रहस्यों को उजागर करेंगे जिससे मान सम्मान में न्यूनता आएगी। आप अत्यधिक व्ययशील प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से धन व्यय करेंगे इससे यदा कदा आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा तथा कर्ज आदि भी लेना पड़ेगा। साथ ही ऋणदाता आप पर कोई मुकद्दमा भी दायर कर सकते है क्योंकि आप आसानी से ऋण वापस नहीं कर पाएंगे। अतः ऋण लेने की प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही अन्य फौजदारी मामलों में भी आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है लेकिन अत्यधिक परिश्रम एवं समय के बाद आपको इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

आपके मामा और मामियों का स्वभाव अच्छा रहेगा तथा समाज में वे सम्मानीय रहेंगे। लेकिन वे अल्पमात्रा में कंजूस प्रवृत्ति के होंगे अतः जितना अपनत्व या लगाव प्रदर्शित करेंगे उसके विपरीत अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त कार्य प्रारंभ में सहयोग न करके अन्त में सहयोग करेंगे। साथ ही आपके मुकद्दमे भी सामान्य रूप से चलते रहेंगे। इस प्रकार न्यूनधिक रूप से आप मुकद्दमे से संबध रखेंगे तथा अन्त में आपको इनमें सफलता प्राप्त होगी तथा मान सम्मान में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त खान पान में भी आपको यथोचित परहेज रखना चाहिए अन्यथा रक्त विकार संबन्धी परेशानियां हो सकती है।

Ms.

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप अनावश्यक चिन्ताओं तथा उत्तेजनाओं से अपने स्वास्थ्य को प्रभावित करेंगी। साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के लिए आपको सीमित रूप से ही परिश्रम करना चाहिए क्योंकि क्षमता से अधिक कार्य करना आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। सामान्य रूप से आप वात पितोत्पन्न जुकाम आदि से कष्ट प्राप्त करेंगी एवं वृद्धावस्था में श्वास आदि से कोई परेशानी भी हो सकती है। इसके साथ ही जोड़ों के दर्द से भी किंचित परेशानी की आपको अनुभूति होगी। अतः स्वास्थ्य के प्रति विशेष सतर्क रहें।

मंगल एक तेजस्वी तथा उग्र ग्रह है अतः आपको कभी भी अनावश्यक रूप में अपने वार्तालाप में कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए तथा यत्नपूर्वक मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए अन्यथा आपको कई प्रकार से समस्याओं का सामना करना पड़ेगा आपके उन्नति

मार्ग में शत्रु हमेशा व्यवधान उत्पन्न करेंगे अतः आपका जीवन अत्यंत ही परिश्रम पूर्ण रहेगा। आप बन्धु मित्र एवं सरकारी अधिकारियों से शत्रुता या विरोध का सामना कर सकती हैं परन्तु अपनी चतुराई, बुद्धिमता तथा वाक्चातुर्य से शत्रुपक्ष या विरोधियों का दमन करने में समर्थ रहेंगी तथा आपकी परेशानियां भी दूर होंगी।

आपके अधिकाशं नौकर भी उग्र स्वभाव के होंगे तथा आपकी गुप्त बातों को वे अन्य जनों से कहकर आपके मान सम्मान में न्यूनता करेंगे। अतः आपको इन पर पूर्ण निगरानी रखनी चाहिए तथा उनके सामने कोई भी व्यक्तिगत वार्तालाप नहीं करना चाहिए। आप जीवन की खुशहाली पर अधिक व्यय करेंगी तथा इसी व्ययधिक्य के कारण आपकी आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है जिससे आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है अतः सोच समझकर ही व्यय करना चाहिए।

मुकद्दमेबाजी की आपको जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि इससे आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मामा मामी से भी आपको इच्छित सुख अल्प मात्रा में प्राप्त होगा तथापि आपको उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। साथ ही आपको अधिक मिष्ठान की उपेक्षा करनी चाहिए जिससे आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

Mr.

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। वह पराक्रमी साहसी तथा व्यावहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होंगी परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। नैतिकता के प्रति भी उनकी रूचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्टता एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रूचिशील होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में वृष राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथोचित समय पर होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे ।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी।

Ms.

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया धनु राशि की सप्तम भाव में स्थिति के कारण जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर वाला बुद्धिमान एवं कार्य कुशल होता है। तथा उसमें विद्वता कलाप्रियता एवं सहिष्णुता का भाव भी रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति बुद्धिमान विद्वान एवं सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यो में वह निपुण होंगे तथा कुशलता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी उनके मन में श्रद्धा होगी तथा सहिष्णुता के भाव से भी युक्त होंगे। इसके अतिरिक्त वह एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे।

आपके पति गौरवर्ण के आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य होगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं बलवान होंगे। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं कला के प्रति समर्पण की भावना रहेगी। उनके शरीर में अग्नि तत्व राशि के प्रभाव से पतलापन रहेगा जिससे व्यक्तित्व आकर्षक बना रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह सम्पन्न करेंगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से पूरा करेंगे। आप दोनों सहनशील स्वभाव के होंगे अतः एक ही प्रवृति होने के कारण आपसी संबंधों में मधुरता होगी तथा दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनंद उठाएंगे।

आपका ससुराल किसी धनाढ्य एवं सम्मानित परिवार से होगा फलतः विवाह के समय आपको मायके से प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको वांछित सम्मान प्रदान करेंगी। वे भी आपको पुत्रीवत स्नेह देंगे तथा महत्वपूर्ण मामलों में सलाह या सहमति का भी आदान प्रदान होगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति की सेवा एवं सम्मान की भावना होगी तथा श्रद्धा पूर्वक उनकी सेवा में तत्पर रहेंगे एवं अपनी और से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे साथ ही साले एवं सालियों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगे तथा वे भी उनको वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

Mr.

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म विज्ञान में अत्यधिक रूचिशील रहेंगे। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में भी श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आपकी पूर्वाभास शक्ति उत्तम रहेगी तथा अन्तर्प्रज्ञा के द्वारा भविष्यवाणी करने में समर्थ होंगे। वास्तव में संसार की असमान्य बातों में आपकी प्रगाढ़ रूचि रहेगी तथा इन विषयों पर समय समय पर कार्य करते रहेंगे। इसके साथ ही ज्यौतिष या आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सम्मान भी मिल सकता है।

आपको अपने वृद्धजनों से पैतृक सम्पत्ति में जमीन जायदाद की प्राप्ति होगी तथा काफी चल एवं अचल सम्पत्ति आपके नाम रहेगी जिससे आप पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। आपात्काल में बिना किसी कार्य को किए हुए अपनी जायदाद को बेचकर आर्थिक सुदृढ़ता भी प्राप्त कर सकते है। साथ ही आपका जीवन भी आराम से व्यतीत होगा तथा समस्त सुख सुविधाओं से युक्त रहेंगे। शादी आदि के अवसर पर आपको काफी मात्रा में आपकी मांग पर दहेज की प्राप्ति होगी। इसमें धन आभूषण वाहन तथा अन्य आधुनिक उपहार होंगे। बीमे आदि से भी आपको लाभ होगा तथा इसकी एजेंसी के द्वारा आप अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। आपके जीवन में चोरी डकैती या अन्य दुर्घटनाएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इससे आपको कोई विशेष हानि या परेशानी नहीं होगी। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप व्यावहारिक तथा आधुनिक विचार धारा की महिला होंगी फलतः अध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति आपकी कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा जीवन में अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगी। अतः आप काफी व्यस्त रहेगी तथा मित्रों के कहने पर भी उपरोक्त विषयों के प्रति आपके मन में कोई रूचि उत्पन्न नहीं होगी। आपको प्रचुर मात्रा में पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा शनैः शनै इसका विस्तार करने में समर्थ रहेंगी। इस प्रकार अपनी मेहनत एवं कार्यकौशल से आप एक धनवान महिला कहलाएंगी। लेकिन जीवन में जुए या सट्टे आदि की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आवश्यक सुख सुविधाओं का उपभोग करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही ससुराल भी आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहेगा। बीमा आदि करने से भी आपको लाभ होगा अतः मकान गाड़ी या अन्य वस्तुओं का आपको बीमा अवश्य कराना चाहिए। यद्यपि इनमें आपको हानि अधिक नहीं होगी परन्तु बीमे से प्रचुर मात्रा

में धन प्राप्त हो जाएगा। जीवन में आपकी कुंडली के अनुसार कोई चोरी या दुर्घटना का योग नहीं बनता है तथापि इनके प्रति आपको आवश्यक रूप से सतर्कता का पालन करना चाहिए। आपकी प्रवृत्ति काफी सजग रहेगी फलतः परेशानियों से सुरक्षित रहेंगी। आपकी आयु भी अच्छी होगी तथा सामान्यतया आपका सांसारिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

Mr.

आपके जन्म समय में नवम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक भाग्यवादी पुरूष होंगे। आप अपने को अन्य जनों के समक्ष आवश्यकता से अधिक धार्मिक प्रदर्शित करने की कोशिश करेंगे तथा पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का अनुपालन करेंगे। साथ ही भगवान के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा दैनिक पूजा या अन्य प्रकार से आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त कर सकते हैं लेकिन यदा कदा इसमें उदासीनता का भाव भी रखेंगे। अतः दैनिक पूजन कार्यक्रम में व्यवधान रहेगा।

आप उच्चशिक्षा प्राप्त करने के उत्सुक रहेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अध्यात्मिक, तंत्र मंत्र एवं ज्यौतिष आदि का अध्ययन भी कर सकते हैं। साथ ही सन्तवाणी का भी ध्यान से श्रवण करेंगे। आपकी प्रवृति परिवर्तनीय होगी। अतः आप समयानुसार अपने शब्दों या वादों को परिवर्तन करेंगे। आप कई तीर्थ स्थानों की यात्राएं भी सम्पन्न कर सकते है तथा अपने धर्म के समस्त पवित्र ग्रंथों का श्रद्धा पूर्वक अध्ययन करेंगे। जीवन में समय समय पर लम्बी यात्राएं सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित धनार्जन भी होगा परन्तु अपनी प्रवृति एवं आर्थिक मामलों में संकीर्णता के कारण यदा कदा आपके मान सम्मान में न्यूनता भी आएगी।

आप एक आदर्श तथा प्रसिद्धि व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप कई बार धमार्थ कुछ दान देने की सोचेंगे परन्तु वास्तव में यह दिखावा होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को करना पसंद नहीं करेंगे जिसमें धन का व्यय होता हो परन्तु अपने पर आप आवश्यकताओं से अधिक व्यय करेंगे लेकिन अन्य जनों की सेवा या सहायता के लिए कुछ भी नहीं करेंगे। पौत्रों से आपको सुख एवं आनन्द प्राप्त होगा वास्तव में आप पूर्वजन्मों के पुण्यों से ही इस जीवन में सुख ऐश्वर्य की अनुभूति कर रहें है लेकिन अगले जीवन के लिए भी आपको कुछ करने की ओर प्रवृत होना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक प्रवृति से युक्त उपवासकर्ता, तीर्थ स्थलों की यात्रा करने वाले तथा धर्म के प्रति श्रद्धालु रहेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में नवम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा धार्मिक साहित्य का रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगी साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी हमेशा रूचि तथा प्रयत्नशील रहेंगी। आप किसी विशिष्ट सिद्धि या उपलब्धि को अर्जित करने के लिए जीवन में सर्वदा यत्नशील रहेंगी जिसके द्वारा आपको समाज में मान सम्मान धन एवं ख्याति अर्जित होगी इसके साथ ही ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपको इसका न्यूनाधिक ज्ञान अवश्य रहेगा।

ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास रहेगा अतः कई बार आप कार्य की अपेक्षा भाग्य को अधिक महत्व प्रदान करेंगी। आपके विचार से भाग्य की प्रबलता के बिना कोई भी सफलता असंभव सी है तथा सौभाग्य से ही मनुष्य जीवन में विशिष्ट सफलताएं अर्जित कर सकता है। साथ ही अपने इष्टदेव की नियमित पूजा करेंगी तथा परिवार में समय समय पर धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करती रहेंगी। आपके विचार में ऐसा करने से बच्चों के संस्कारों में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त समय समय पर तीर्थ यात्राएं भी करेंगी तथा साधु महात्माओं की संगति से आपको प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि प्राप्त होगी।

आपकी व्यावसायिक तथा आनन्ददायक लम्बी दूरी की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा इनसे आपको काफी ज्ञानार्जन भी होगा। साथ ही आतिथ्यभाव भी आप में विद्यमान रहेगा। पौत्रों से भी आपको इच्छित सुख प्राप्त होगा। वास्तव में आप इस जीवन में जो भी आनंद या उपलब्धि अर्जित करती है वह पूर्व जन्म के पुण्यों का ही प्रभाव है। इसके अतिरिक्त दैवी कृपा से धनार्जन करेंगी तथा रास्ता, बगीचा या तालाब तथा मन्दिर आदि परोपकार संबंधी कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Mr.

आपके जन्म समय में दशमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। साथ ही बृहस्पति भी दशमभाव में ही स्थित है। सिंह राशि अग्नि तत्व एवं बृहस्पति वायुतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी। साथ ही उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर होंगे। आप किसी स्वतंत्र कार्य को करने की भी इच्छा रखेंगे जिससे आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति हो सकती है।

सिंह राशि में दशम भावस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षा विभाग, व्याख्याता शिक्षक, प्रोफेसर, न्यायाधीश, सचिव, सलाहकार, बैंक अधिकारी, पांडित्य, धर्मोपदेशक, व्यवस्थापक, प्रबंधक, कार्मिक विभाग तथा राजनीति में इच्छित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा आपके उन्नति मार्ग सर्वत्र प्रशस्त होंगे एवं अनावश्यक समस्याओं तथा कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सुवर्ण आदि धातु का व्यापार, शेयर ब्रोकर या क्रय विक्रय, वित्त कम्पनी का स्वामित्व या पूंजी निवेश के द्वारा, संस्था का स्वामित्व एवं शैक्षणिक संस्थाओं के संचालन से वांछित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। साथ ही धार्मिक संस्थाओं से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही कार्य या व्यापार का प्रारंभ करें तो आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

दशमभाव में बृहस्पति के केन्द्रस्थ स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी तथा अपनी योग्यता के बल पर आप किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी अर्जित कर सकते हैं। इससे आपके यश में अभिवृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके यथोचित आदर प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप किसी संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य के रूप में भी कार्यरत हो सकते है जिससे आपको जीवन में सन्तुष्टि की अनुभूति होगी।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान एवं आदर्श व्यक्ति होंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। फलतः सभी लोग उनसे प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा शिक्षा की वे उच्च स्तर पर व्यवस्था करके आपको आदर्श नागरिक बनाने के लिए यत्नशील होंगे। आपके कार्य क्षेत्र की उन्नति में भी उनका मुख्य सहयोग तथा योगदान रहेगा। आप भी अपने बुद्धिमता पूर्ण कार्य कलापों से पिता की मान प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी होगी साथ ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग लेंगे जिससे आप सामान्यतया सुख की अनुभूति करेंगे।

Ms.

आपके जन्मसमय में दशमभाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही बुध भी दशम भाव में स्थित है। मीन राशि जलतत्व युक्त तथा बुध ग्रह पृथ्वीतत्व से युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ वौद्धिकता से भी युक्त होगा। कार्यक्षेत्र में आप समयानुसार परिवर्तन के भी इच्छुक होंगी तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको समय समय पर वांछित लाभ एवं उन्नति प्राप्त होती रहेगी जिससे मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

बुध की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आजीविका की दृष्टि से आप के लिए लिपिकीय कार्य, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्यौतिषी पुस्तक विक्रेता, सम्पादन, संशोधन आदि वकील, संदेश वाहक (दूत) राजदूत, टेलीफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेगे। यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों को अपना कार्यक्षेत्र बनाएंगी तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्र ही अपनी आजीविका के लिए चयन करना चाहिए।

वाणिज्यकारक ग्रह बुध के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। आपके लिए व्यापारिक दृष्टिकोण से पुस्तकों का क्रय विक्रय या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती,पुष्प मालाएं, कागज के खिलौने, किसी एंजेसी अथवा कमीशन का कार्य, कला एवं चित्रकारीका स्वतंत्र कार्य तथा यंत्रों के निर्माण का कार्य विशेष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभार्जन होगा जिससे आपकी सन्तुष्टि बनी रहेगी।

लग्नेश एवं चतुर्थेश बुध की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा स्वपराक्रम एवं योग्यता से आप प्रतिष्ठा एवं यश अर्जित करने में भी समर्थ होंगी परन्तु बुध की नीच स्थिति के प्रभाव से इसमें न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब एवं व्यवधान भी आ सकते है परन्तु इससे आपको विचलित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण संस्थाओं या संस्था में भी आप किसी सम्मानीय पद को अर्जित कर सकती है।

आपके पिता बुद्धिमान योग्य एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अपने उत्तम कार्यकलापों से सामाजिक जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे फलतः उनकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबंध करके आपको योग्य बनाएंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका मुख्य योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ एवं उन्नति अर्जित करेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं आज्ञाकारिता का भाव होगा एवं उनकी सेवा करने में तत्पर होंगी। इसके अतिरिक्त आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथापि नीचस्थ बुध के प्रभाव से परस्पर संबंधों में किंचित तनाव हो सकता है लेकिन यह क्षणिक होगा तथा परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

Mr.

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी पुरूष होंगे तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं तथा उमंगें विद्यमान रहेंगी। चूंकि आप एक पराक्रमी तथा परिश्रमी पुरूष होंगे अतः जीवन में आपकी अधिकाशं आकांक्षाएं पूर्ण हो जाएंगी। आपकी कुंडली में आर्थिक महत्वाकांक्षा की प्रबलता रहेगी साथ ही विभिन्न प्रकार से धन अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी। आप लेखन कार्य, ज्यौतिष, कमीशन एजेंट, गणित या शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हो सकते है अथवा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही व्यापार के द्वारा भी आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही उनकी आपके प्रति स्नेह एवं पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा एवं आपको सुख दुख में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा अवसरनुकूल माता की तरह आपका पालन पोषण तथा मार्ग निर्देशन करेंगी।

आप मित्र मंडली के मध्य अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा आपके सभी मित्र चतुर चालाक एवं शिक्षित होंगे। अवस्था के साथ साथ मित्रों के आप पथ प्रदर्शन भी करेंगे तथा वे आपसे हमेशा सलाह लेते रहेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी सामान्यतया उच्च रहेगा तथा अपने समाज के मध्य प्रतिष्ठित एवं आदरणीय समझे जाएंगे। साथ ही अन्य जनों की सेवा एवं परोपकार संबंधी कार्यो को भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य क्षेत्रों में भी उन्नतिशील रहेंगे तथा धन ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में इच्छाओं की बहुलता रहेगी। साथ ही इनकी पूर्ति अपने पराक्रम एवं परिश्रम के द्वारा अधिकाशं मात्रा में करने में सफल रहेंगी। आप में संगठनात्मक शक्ति विद्यमान रहेंगी तथा अन्य लोगों को नियंत्रित तथा संगठित करके उनसे कार्य करवाने में समर्थ रहेंगी। अतः आप प्रबन्धक, प्रशासनिक या रक्षा संबन्धी विभागों में कार्यरत हो सकती है अथवा जीवन में इनसे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होगा। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे। अतः आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही होटल आदि के व्यवसाय से आपको विशिष्ट लाभ की प्राप्ति होगी। बड़े भाईयों से जीवन में आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होगा तथा अपने स्नेह युक्त व्यवहार से आपको प्रसन्न रखेंगे तथा आप भी उनका पूर्ण मान सम्मान करेंगी।

आप अच्छी एवं अधिक मित्र मंडली को पसन्द करेंगी तथा आपके सभी मित्र उत्साही पराक्रमी निडर तथा शिक्षित रहेंगे। यद्यपि आप स्वछन्द प्रवृत्ति की महिला होंगी तथापि अन्य जनों के साथ कार्य करने में आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी। आप एक सामाजिक महिला होगी तथा क्षेत्र या समाज के सभी लोगों से आपके सम्पर्क रहेंगे तथा उनकी सेवा एवं भलाई करने के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगी फलतः समाज या क्षेत्र में विख्यात रहेंगी एवं जीवन में स्वपराक्रम से किसी विशिष्ट सामाजिक सम्मान को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी परन्तु यदा कदा बाएं कान की परेशानी से कष्ट प्राप्त होगा। लेकिन आपका सामान्य जीवन सुखऐश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

Mr.

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़, धन ,वाहन एवं व्यापार आदि से उच्च स्थिति में रहेंगे। साथ ही आप एक अधिकारी स्तर के व्यक्ति होंगे तथा सुदंर घर से भी युक्त रहेंगे आपकी आय निरन्तर होती रहेगी क्योंकि आपको धनार्जन करना अच्छी तरह आता है। आपके सरकारी या अर्धसरकारी बांडो या संस्थाओं में पूंजीनिवेश रहेगा जिससे समय समय पर पूर्ण लाभ होगा। साथ ही आप एक ईमानदार उद्योगपति भी हो सकते है। आप आजीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में आय स्रोत भी प्रशस्त होंगे। आपकी बचत उत्तम रहेगी तथा अपने कुशलता से धनार्जन करके बचत भी करेंगे।

आपका रहन सहन तथा खान पान उच्च स्तर का रहेगा तथा इसी स्तर को हमेशा बनाएं रखेंगे लेकिन आपको इसमें अत्यधिक व्यय करना पड़ेगा। आपको स्वादिष्ट एवं महंगा भोजन करना भी पसन्द रहेगा जिसके लिए आप अच्छे होटलों में भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त मित्रों आदि पर भी आप मुक्त भाव से व्यय करेंगे।

आपकी यात्राएं भी सामान्यतया होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होगी ये यात्राएं कार्य वश या भ्रमण के लिए होंगी क्योंकि आपको अच्छे स्थानों की सैर करना तथा अच्छे दृश्य देखना अच्छा लगता है। इस प्रकार आप प्रसन्नता पूर्वक धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आपका जीवन सामान्यतया परिवर्तनशील रहेगा तथा सुखऐश्वर्य से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा विभिन्न स्रोंतो से आपका धनार्जन होगा लेकिन आपकी प्रवृति व्ययशील रहेगी तथा धन को आप उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगी। पारिवारिक जनों के स्तर खान-पान रहन सहन वस्त्रादि पर भी आपका व्यय अधिक होगा तथा भौतिक विलासमय साधनों पर भी आप दिल खोलकर व्यय करेंगी। साथ ही किसी ख्याति प्राप्त कम्पनी में पूंजी निवेश पर भी व्यय करेंगी जिससे भविष्य में आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा ।

भौतिक उपकरणों से आपका घर सुसज्जित रहेगा तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता एवं आनंद की अनुभूति होगी। आपकी जीवन में समय समय पर तीर्थ यात्राएं भी होती रहेगी तथा दूर समीप की यात्राएं भी सम्पन्न होगी। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी। साथ ही भ्रमण या पर्यटन स्थलों की भी सैर करने की उत्सुक होंगी। यात्राओं में आप सक्रिय रहेंगी फलतः इससे उचित मात्रा में लाभ एवं सम्मान प्राप्त

होगा।

आपकी विदेश संबंधी यात्रा भी सम्पन्न होगी एवं इससे आपका भविष्य उज्जवल होगा। साथ ही काफी समय तक विदेश में प्रवास भी कर सकती है। इससे खुशहाली, ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

दशा विश्लेषण

Mr.

महादशा :- शनि
(24/03/2012 - 24/03/2031)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 24/03/2012 को आरम्भ और 24/03/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है और फल की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा करता है। फल प्राप्ति की दिशा में यह जातक को कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है, किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है। अतः यह एक 'कार्मिक' ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि आपकी जन्मकुण्डली के पांचवें, नवें और बारहवें भाव पर है और इन भावों पर इसका प्रभाव है। तृतीय भाव, जिसमें यह स्थित है, मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, पराक्रम, छोटी यात्रा, संप्रेषण, हाथ, गले, बाँह तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

साहस तथा पराक्रम के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव को शक्ति प्रदान करता है। इसलिए इस दशा के दौरान आप स्वयं को साहसी और बहादुर अनुभव करेंगे और आपको कोई गम्भीर बीमारी अथवा स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि तृतीय अर्थात साहस, बुद्धि और अभिरुचि के भाव में स्थित है। फलतः आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके ऋणों का भुगतान होगा और आप आराम व विलास की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

बहादूर तथा साहसी होने के कारण आप तरंगी तथा निर्मम होंगे। आप स्थानीय बोर्ड, नगर निगम आदि के प्रधान या अध्यक्ष हो सकते हैं। आपको सफलता मिलने में कठिनाई होगी और लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं आएंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम और सद्भाव पूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपका सहयोग करेंगे। किन्तु, आपके भाई-बहन समस्याएं और कठिनाइयाँ खड़ी करेंगे जिनका सामना आप साहसपूर्वक करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए दशा अनुकूल है।

Ms.

महादशा :- बुध
(14/02/2019 - 14/02/2036)

बुध की महादशा 14/02/2019 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 14/02/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थित अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियाँ के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अत्ति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। अपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

दशा विश्लेषण

Mr.

महादशा :- बुध
(24/03/2031 - 24/03/2048)

बुध की अन्तर्दशा 24/03/2031 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 24/03/2048 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध एकादश भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या तथा साझेदारी में बाधा हुई होगी और विरोधी उत्पन्न हुए होंगे। बुध की वर्तमान दशा में आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, स्फूर्तिवान, स्वस्थ तथा शक्तिशाली होंगे। विषाणुजन्य ज्वर तथा संक्रामक बीमारी, चर्मरोग और स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है। स्वयं को अनावश्यक मानसिक या शारीरिक कष्ट न दें। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति भी होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश में लाभ होगा। आप दिन ब दिन तरक्की करेंगे और आपको सभी कार्यों में सफलता तथा लाभ मिलेगा। जीविका और व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को प्रतिस्पर्धा में सफलता और उच्चाधिकारियों या सरकार से लाभ मिलेगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी औश्र सहकर्मियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, आय में वृद्धि, व्यापार की उत्तम संभावना तथा जीवन में तरक्की होगी । आर्थिक प्रगति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आनन्द और वाहन का सुख मिलेगा। आप गाड़ी की खरीद और विक्री कर सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपको अचल सम्पत्ति का अचानक लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और चन्द्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी जो लाभदायक होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। सामूहिक गतिविधियों से आपको लाभ होगा। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यापार

तथा अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि होगी। आप सभी बौद्धिक कार्यों में बहुत अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा और वे आपकी खुशी के स्रोत होंगे। आपके जीवन साथी को सट्टे तथा निवेश में लाभ, अचानक धन की प्राप्ति तथा बच्चों से सुख मिलेगा। आपका आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उन्हें जमीन-जायदाद और सुख की प्राप्ति होगी। आपको पिता की सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, उनकी यात्रा होगी और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, सम्पत्ति और पिता से लाभ मिलेगा। आपके बड़े भाई-बहनों को सुख, यश और ख्याति मिलेगी और उनकी यात्रा होगी। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपको सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, आपके मित्र प्रभावशाली होंगे और आपकी मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के कारण आपको लाभ वाहन तथा सुख की प्राप्ति होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा होगी तथा जीवन में प्रगति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और कुछ परिवर्तन होगा। शनि की अन्तर्दशा में कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

Ms.

महादशा :- केतु
(14/02/2036 - 14/02/2043)

केतु की महादशा 14/02/2036 को आरम्भ और 14/02/2043 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु बारहवें भाव में स्थित है और इसकी दृष्टि छठे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको आराम, साझेदारों से लाभ, विवाह और यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको धन समृद्धि की प्राप्ति, उच्च शिक्षा तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शनि की राशि में स्थित केतु के कारण गठिया, मासपेशियों में दर्द और वायु से संबंधित रोग हो सकते हैं। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, बुखार, संक्रामक बीमारी, आँख में पीड़ा, चर्मरोग और निचले भागों में कष्ट हो सकता है। कुछ उपाय कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। आय से अधिक व्यय होगा। जहाँ तक संभव हो सट्टे से बचें। आप अपने प्रयास से धन संग्रह करेंगे। धन के आयोजन में सावधानी की जरूरत है। जीविका और व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर, गुप्त-विद्या, नर्सिंग, रेडियोग्राफी, न्यूरॉलॉजी आदि का चयन सकते हैं। डाक्टरी उपकरण, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, लिफ्ट, द्रव-इंजीनियरी, टेलीफोन, दवा आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को बाहरी स्रोतों से लाभ होगा, साझेदारी तथा वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के कारोबार में कुछ परिवर्तन होगा और सहकर्मियों तथा अधीनस्थों से सहायता मिलेगी। आपका विदेशी स्रोतों से कारोबार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आराम मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि किन्तु, सम्पत्ति के लेन-देन में सावधानी की जरूरत है। इस दशा में विदेश यात्रा की सम्भावना है जो लाभदायक सिद्ध होगी। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आप अपने अध्ययन का मार्ग या संस्था बदल सकते हैं। अपने स्तर को बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा विमान इन्जीनियरिंग, तत्त्व-मीमांसा या गुप्त विद्या, रेडियोग्राफी दवा से संबंधित विषय आदि में आपकी रुचि हो सकती है। बौद्धिक क्षमता के सभी विषयों पर आधिपत्य होगा।

परिवार :

परिवार के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्गदर्शन, की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है, शत्रुओं के कारण परेशानी और कार्यस्थान में परिस्थिति प्रतिकूल हो सकती है। आपकी माता को धन-समृद्धि की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि पिता की जमीन जायदाद में वृद्धि और प्रगति होगी तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कार्यों में सफलता मिलेगी और जीवन में प्रगति होगी जबकि बड़ों को लाभ और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, परिवर्तन और आध्यात्मिक कार्य में रुचि होगी। शुक्र के कारण छोटी यात्रा, कुछ बाधा, अचानक लाभ और हानि तथा स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य के कारण विरोधियों पर विजय और कुछ बाधा हो सकती है। चन्द्र के कारण बच्चों से सुख मिलेगा, परिवार में शिशु का जन्म होगा और धन तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्याति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कार्यों में सफलता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा, लाभ और व्यय होगा। बुध की अन्तर्दशा में आराम मिलेगा, विवाह और यात्रा होगी तथा व्यापार में लाभ में वृद्धि होगी।

दशा विश्लेषण

Mr.

महादशा :- केतु
(24/03/2048 - 24/03/2055)

केतु की महादशा 24/03/2048 को आरम्भ और 24/03/2055 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु अष्टम भाव में है जहाँ से उसकी दृष्टि द्वितीय भाव पर है। उसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रह थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध की दशा में आपको अप्रत्याशित धन, सभी प्रकार का लाभ, जीवन में परिवर्तन तथा मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या, अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ और हानि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको कुछ समस्या हो सकती है। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी, आँख की पीड़ा, चर्मरोग, गठिया, जननांग से संबंधित बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको कुछ अप्रत्याशित आय हो सकती है। आपको विरासती सम्पत्ति, बोनस, ग्रैच्यूइटी और सेवा-निवृत्ति से लाभ मिल सकता है। व्यापार-व्यवसाय में अच्छा लाभ हो सकता है। सट्टे और लेन-देन में साधारण लाभ होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, वायु सैनिक के कार्य, दवा, बौद्धिक कार्य, अनुसन्धान-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। किताब, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, रत्न, समाचार पत्र, पत्रिका आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी कठिनाइ उत्पन्न करेंगे। आपका मामूली परिवर्तन संभव है। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार हो सकता है और आपके लक्ष्य की पूर्ति होगी।

वाहन, यात्रा जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। आपकी एक सुन्दर गाड़ी होगी। सम्पत्ति का लेन-देन लाभदायक सिद्ध होगा। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप शोध कार्यों में अच्छा करेंगे। आपको अपन स्तर बनाये रखने तथा परीक्षा और प्रतियोगिताओं में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा, लेखन, मीडिया, लेखा कार्य आदि में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक

कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा में अच्छा करेंगे और आपको उन पर गर्व होगा। आपके जीवनसाथी को यश, ख्याति और पहचान मिलेगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि और समृद्धि तथा सफलता मिलेगी जबकि आपके पिता को सभी प्रकार का लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ होगा और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़ों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्रा और उच्च शिक्षा होगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा, व्यवसाय में वृद्धि और वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। शुक्र के कारण खर्च, लम्बी यात्रा और साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्मान की प्राप्ति और जीवन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में यात्रा, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और आय तथा समृद्धि अच्छी होगी। राहु कुछ बाधा उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सम्पत्ति मिलेगी जबकि शनि के कारण कुद परिवर्तन, यात्रा और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में लाभ, मामूली स्वास्थ्य समस्या और परिवर्तन होगा।

Ms.

महादशा :- शुक्र
(14/02/2043 - 14/02/2063)

शुक्र की महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 14/02/2043 को आरंभ और 14/02/2063 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है और अच्छे स्वाद, संगीत, नाटक, ऐंद्रिय सुखों का द्योतक है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में नीच का तथा मीन में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर उसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् दशम् भाव सम्मान, प्रतिष्ठा, नाम और यश, सफलता और प्रतिष्ठा, ख्याति, लक्ष्य अधिकार, कर्त्तव्य, पदोन्नति, आधुनिकता, उच्च पद तथा राजकी सम्मान एवं जाँघों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र दशम् भाव में स्थित है जहां से यह आपकी जन्मकुण्डली के चतुर्थ भाव, जो परिवार का भाव और सुख स्थान है, को, एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र तक देखता है। इसके फलस्वरूप आपकी इस दशा काल में कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप सभी

तरह का पारिवारिक आनन्द उठाएँगे।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र जीवनचर्या तथा व्यवसाय के दशम भाव में स्थित है, जो आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने के अनेक अवसर प्रदान करेगा। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छी स्थिति के कारण सम्मान प्राप्त करेंगे तथा शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको नया घर तथा वाहन प्राप्त होने की संभावना है।

व्यवसाय :

आप जो कोई भी व्यवसाय अपनाएंगे उसमें सफल होंगे। आपको आदर और प्रतिष्ठा मिलेगी। आप सुखी और तेज होंगे और आपको व्यवसाय के सिलसिले में यात्रा से लाभ होगा। आपके भाई-बहन आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

अपने व्यवसाय तथा नौकरी के प्रति समर्पित होने के कारण आप अपने जीवन साथी का अनजाने में तिरस्कार करेंगे जिससे आपके परिवार में दरार पैदा हो सकती है और घरेलू जीवन बरवाद हो सकता है।

Mr.
एस्ट्रोग्राफ – 2025

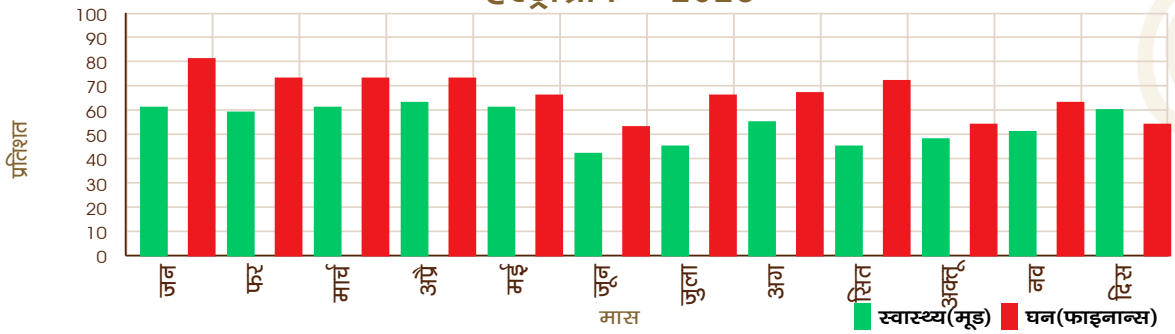

Ms.
एस्ट्रोग्राफ – 2025

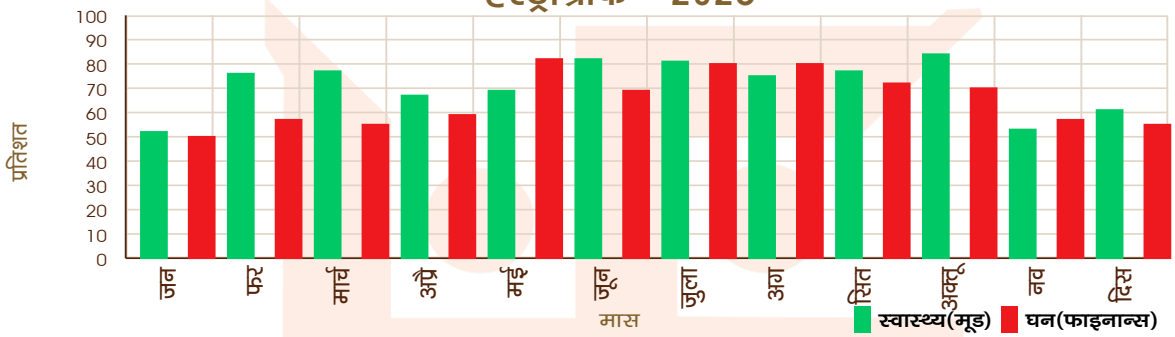

Mr.
एस्ट्रोग्राफ – 2026

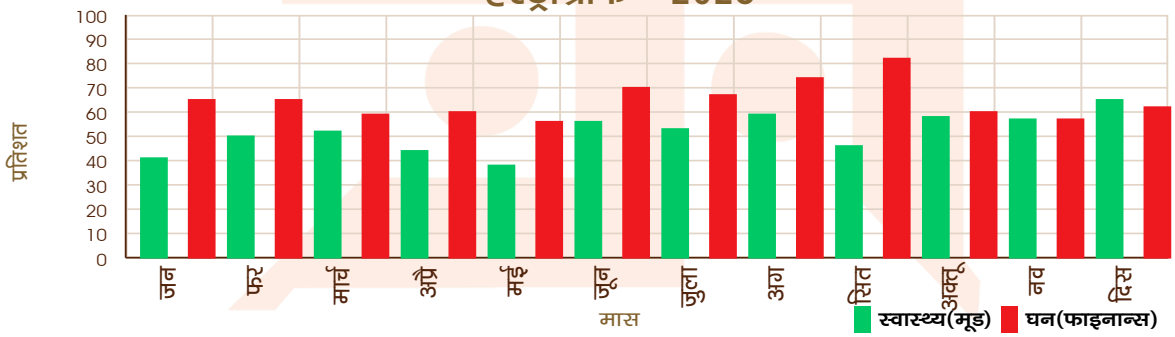

Ms.
एस्ट्रोग्राफ – 2026

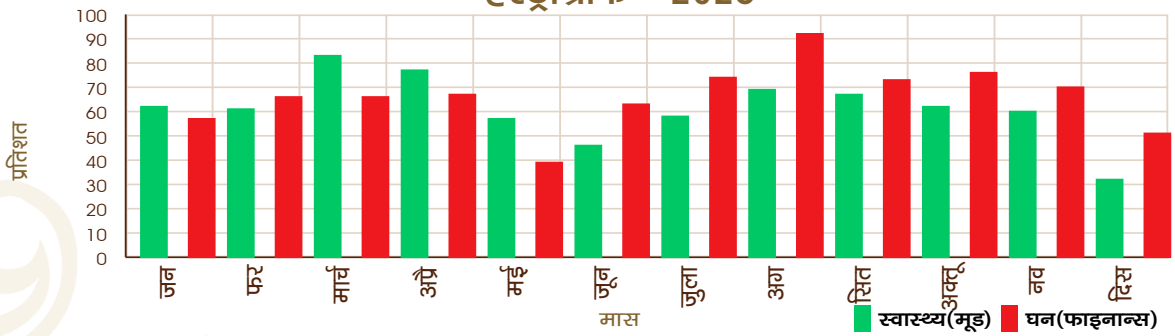

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2027

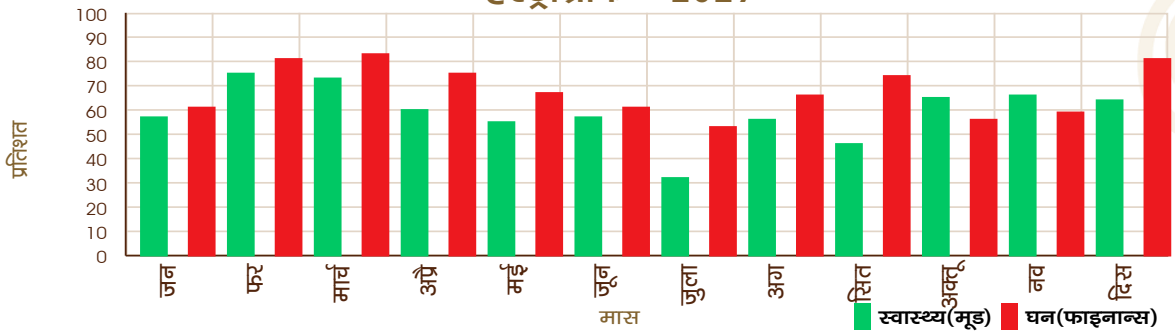

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2027

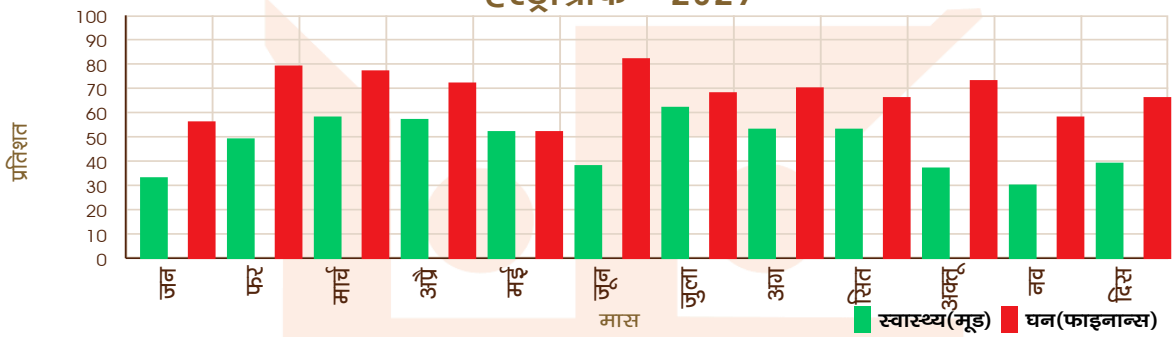

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2028

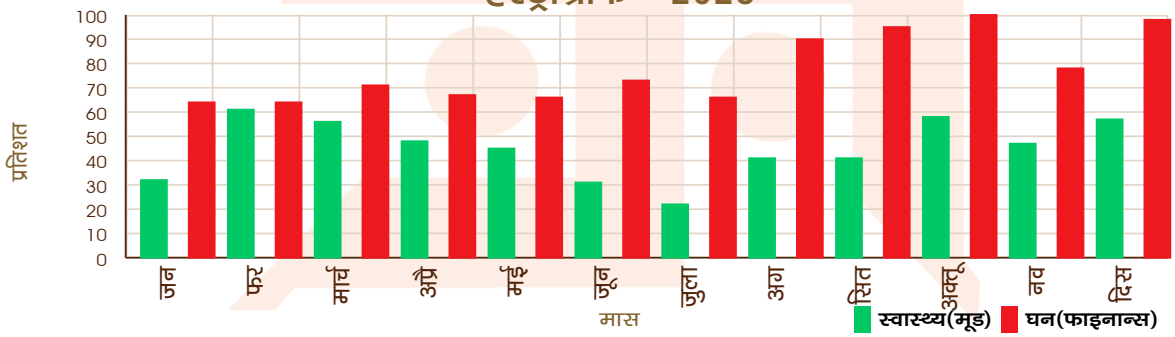

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2028

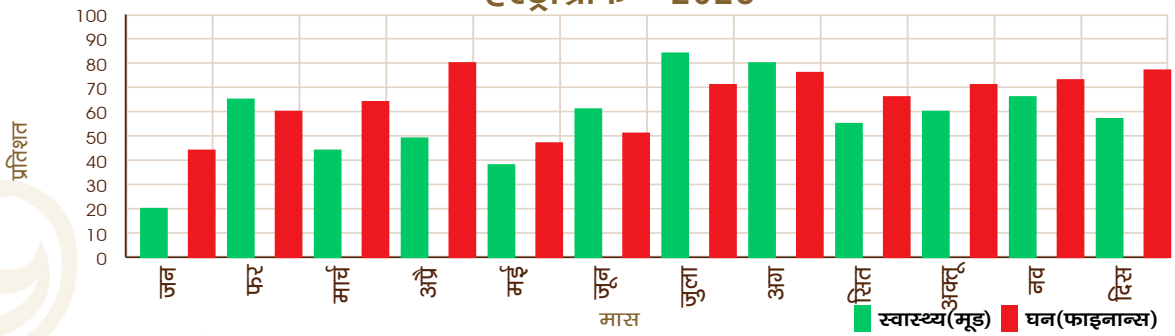

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2029

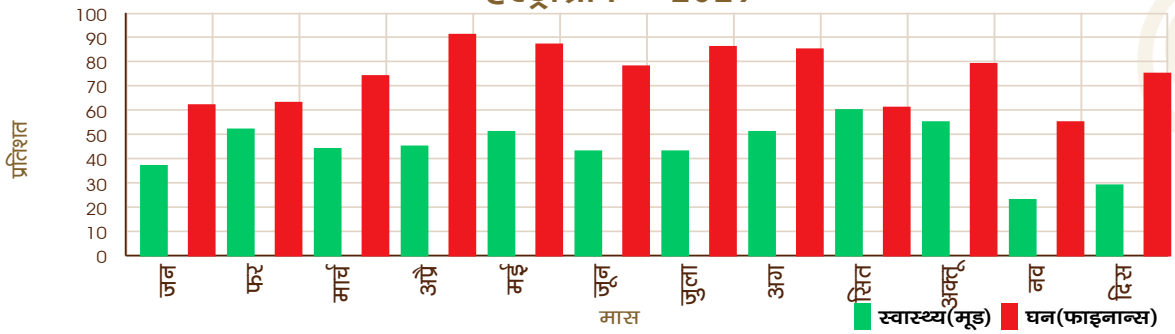

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2029

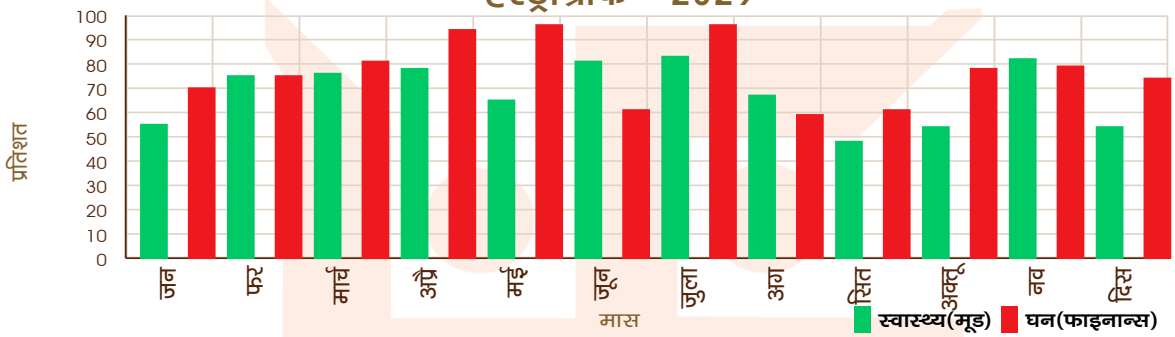

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2030

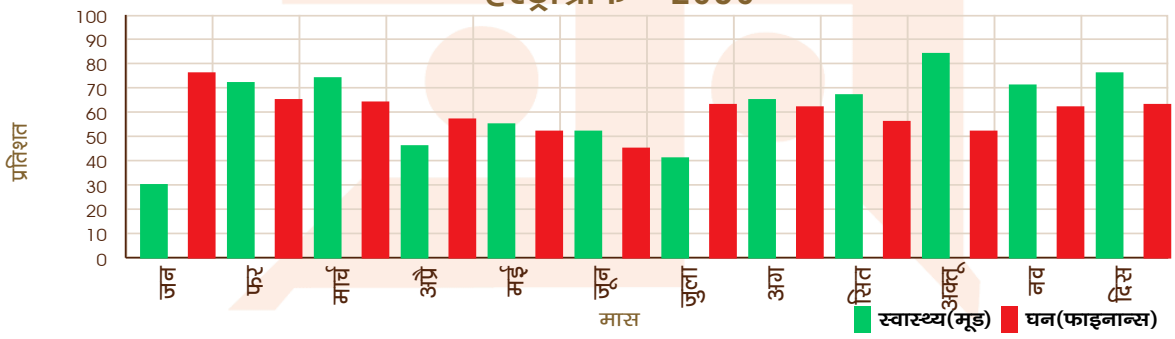

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2030

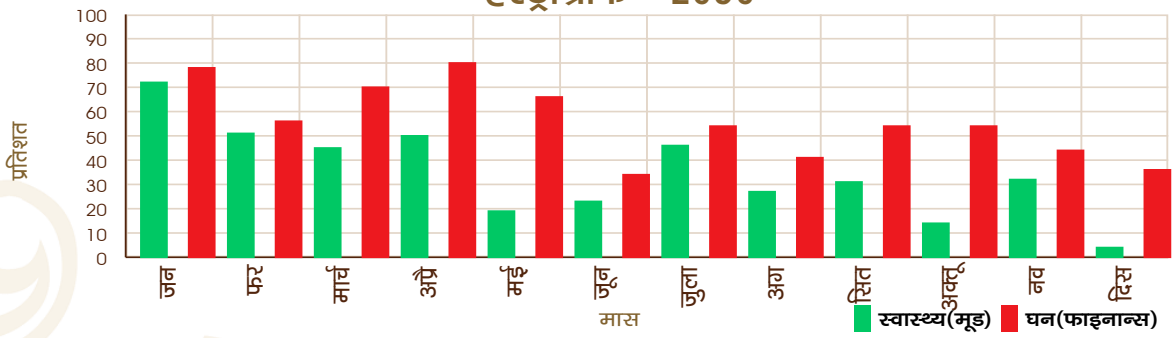

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2031

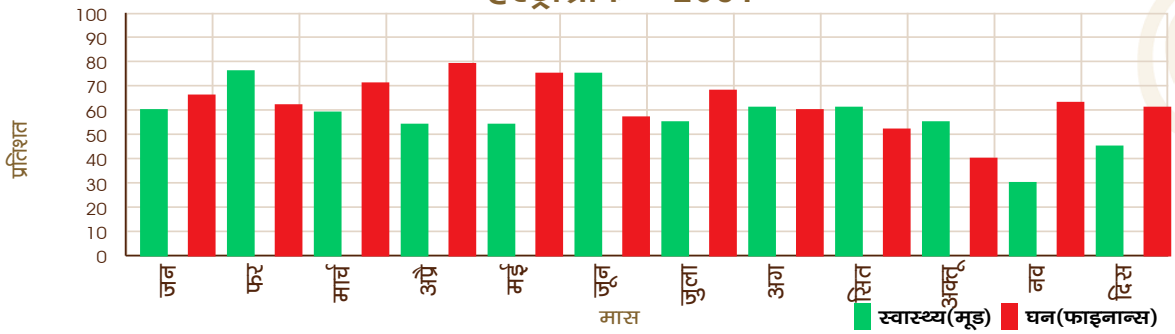

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2031

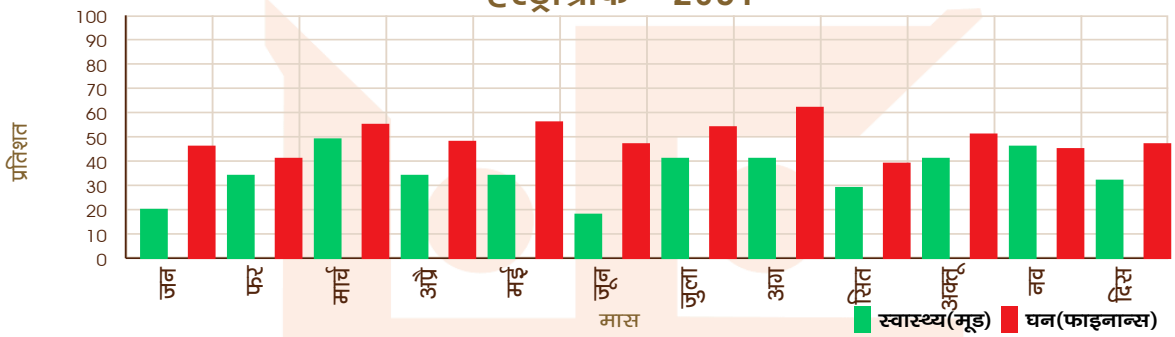

Mr.

एस्ट्रोग्राफ - 2032

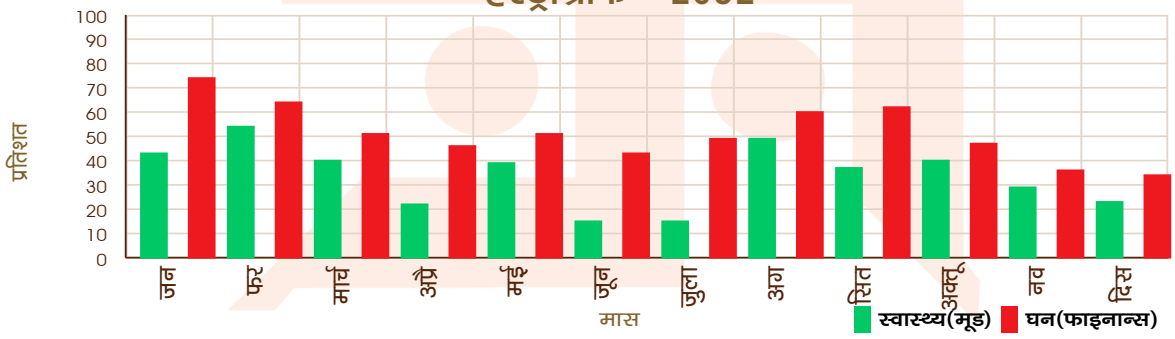

Ms.

एस्ट्रोग्राफ - 2032

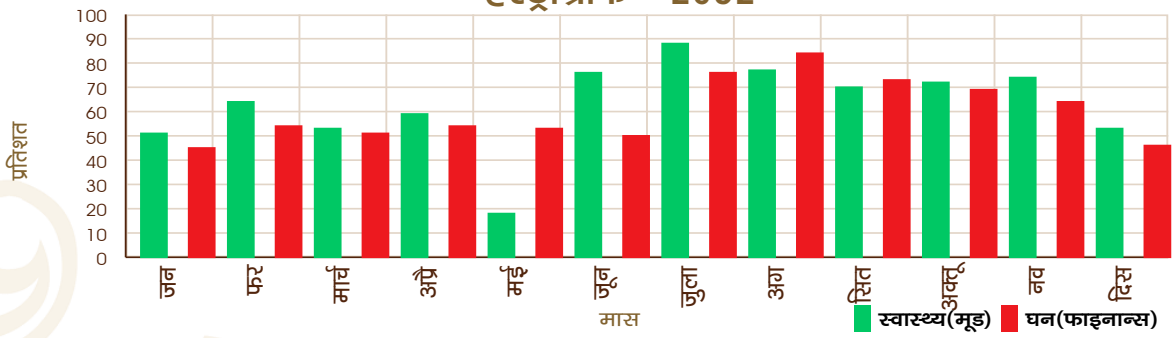

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2033

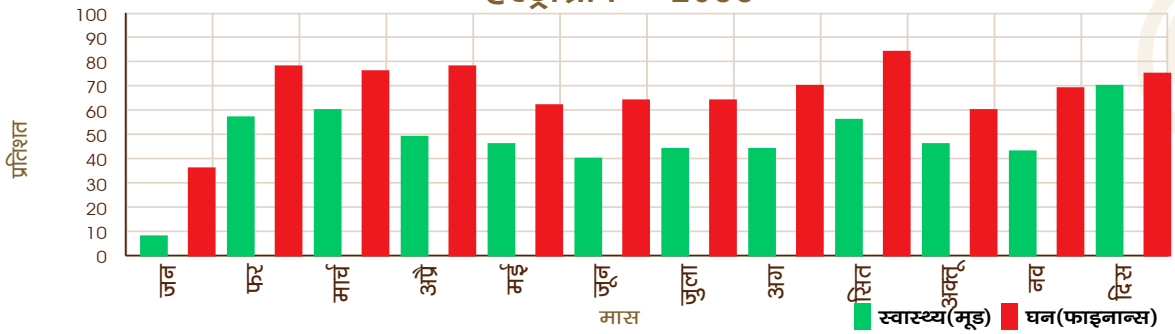

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2033

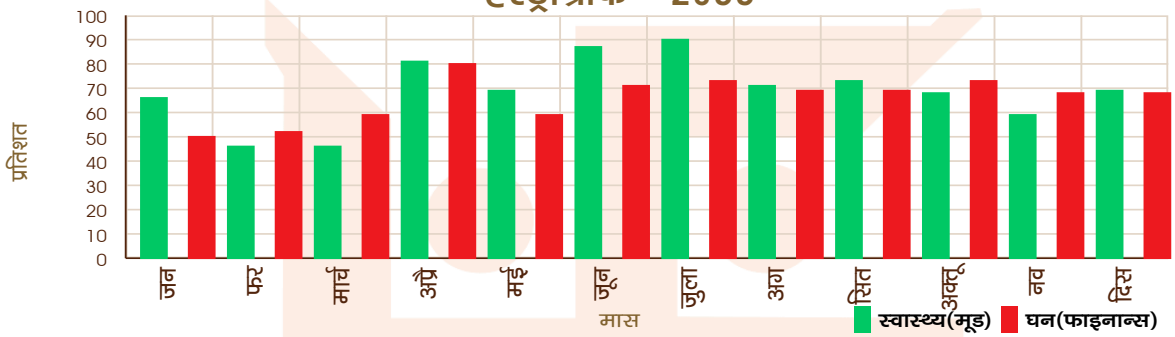

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2034

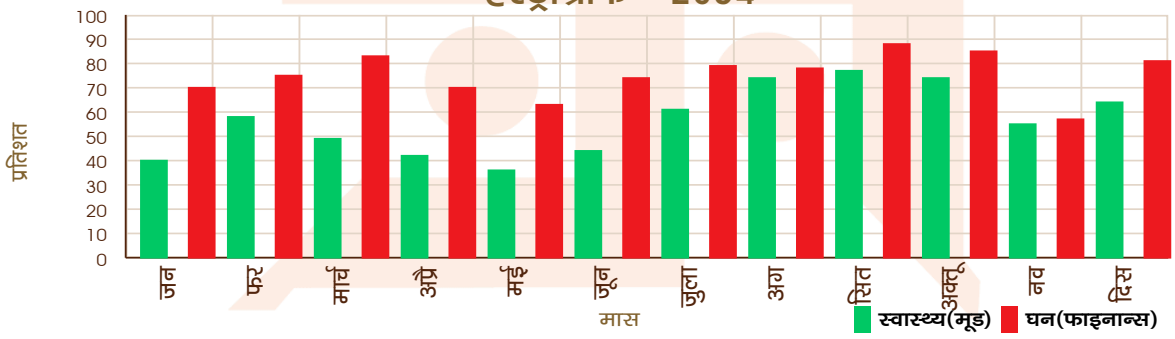

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2034

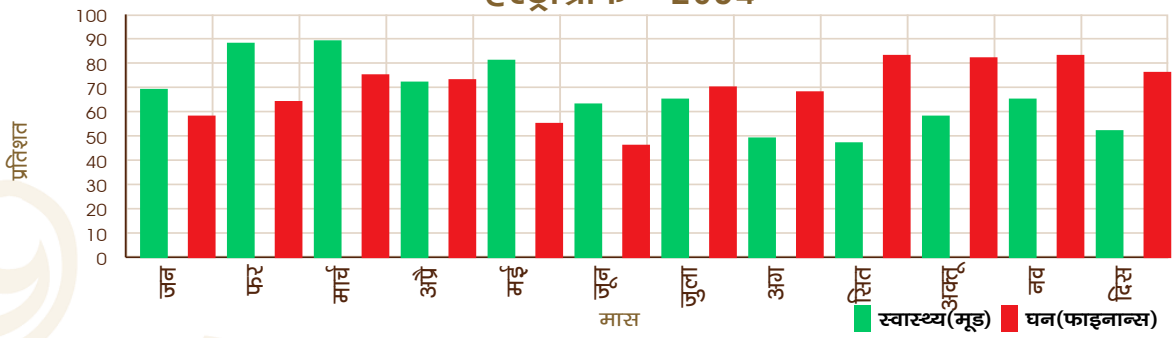

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2035

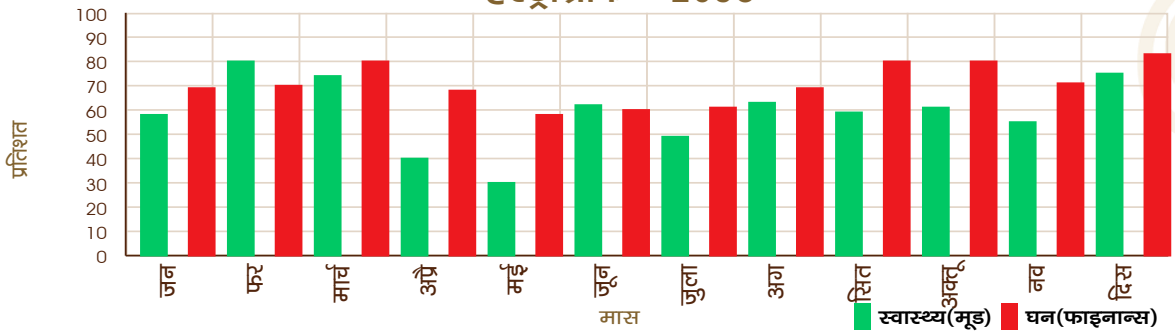

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2035

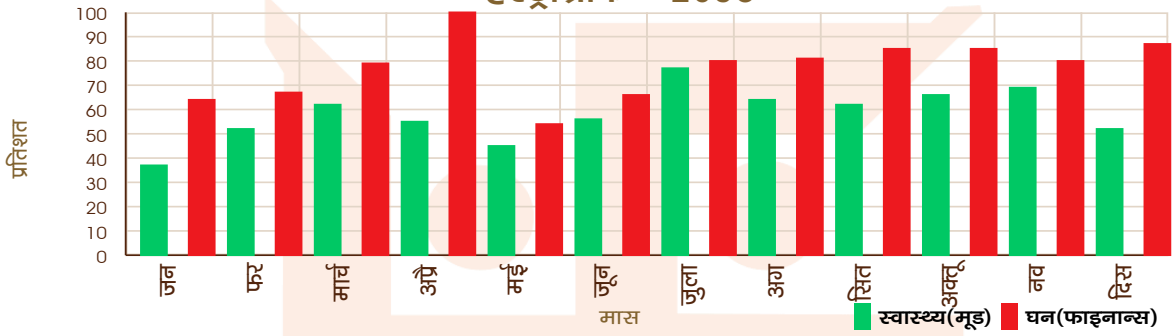

Mr.
एस्ट्रोग्राफ - 2036

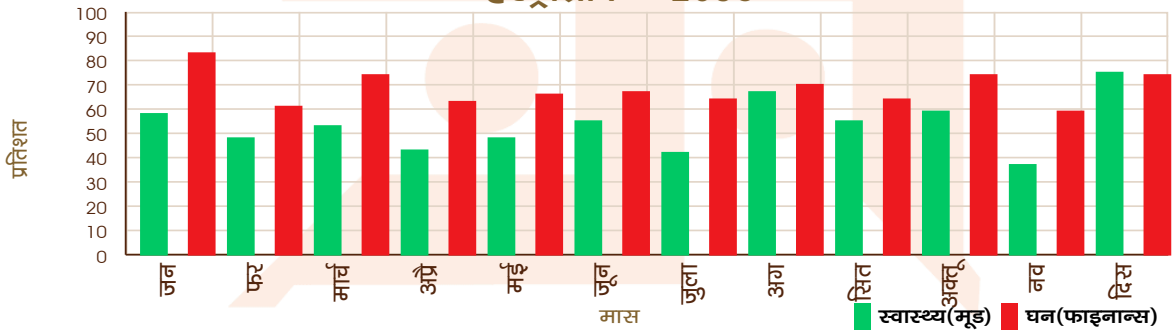

Ms.
एस्ट्रोग्राफ - 2036

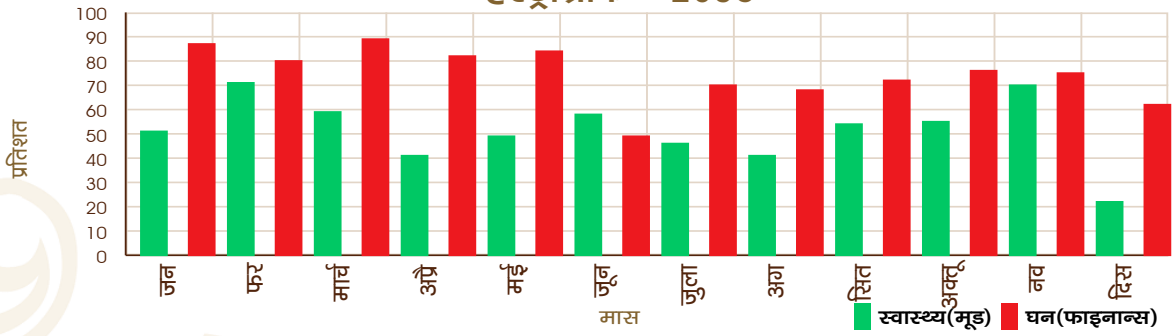

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com